नक्षत्र विवेचन

www.futurestudyonline.com

भारतीय पंचांग तथा ज्योतिष में नक्षत्रों (अंग्रेजी में Constellations) को अत्यधिक महत्व दिया गया है। परंपरानुसार 'न क्षरतीति नक्षत्राणि' अर्थात् जिनका क्षरण नहीं होता, वे 'नक्षत्र' कहलाते हैं। इन्हें अपने स्थान पर स्थिर माना गया है जबकि सूर्य सहित अन्य सभी ग्रह-उपग्रह नक्षत्रों में अपने-अपने पथ पर विचरण करते हैं। प्राचीन ज्योतिष में नक्षत्रों की संख्या 24 मानी गई थी जो वर्तमान में फाल्गुनी, आषाढ़ा तथा भादप्रदा को जोड़कर 27 हो गई हैं। यदि इनमें 'अभिजित्' को भी जोड़ लिया जाए तो कुल 28 नक्षत्र बताए जाते हैं। अथर्ववेद में भी 27 नक्षत्रों का उल्लेख निम्न ऋचा (19 | 7 | 1) में किया गया है-

चित्राणि साकं दिवि रोचनानि सरीसृपाणि भुवने जवानि।

तुर्मिशं समतिमिच्छमानो अहानि गीर्भिः सपर्यामि नाकम्।।

नक्षत्रों को कई उप-विभागों (छोटे-छोटे हिस्सों) में भी बांटा गया है, यथा राशियों के आधार पर तथा चन्द्रमा के रहने की अवधि के आधार पर। इन्हें मुहूर्तों में भी बांटा जाता है, उदाहरणस्वरूप कोई नक्षत्र 30 मुहूर्त रहता है, कोई 35 मुहूर्त रहता है। एक मुहूर्त 2 घटी यानि अड़तालिस मिनट का होता है। पंचांग की गणना के अनुसार चन्द्रमा जिस नक्षत्र में होता है, उसी के आधार पर फलगणना कर भाग्य व मुहूर्त बताया जाता है।

नक्षत्रों का वर्गीकरण

नक्षत्रों को दो आधारों पर वर्गीकृत किया जाता है। पहला सात वारों की प्रकृति के अनुसार, ध्रुव (स्थिर), चर (चल), उग्र (क्रूर), मिश्र (साधारण), लघु (क्षिप्र), मृदु (मैत्र) तथा तीक्ष्ण (दारुण)। दूसरा वर्गीकरण उनके मुख के आधार पर है जिसमें उन्हें ऊर्ध्वमुख, अधोमुख तथा तिर्यडमुख (तिरछे मुख वाले) की संज्ञा दी जाती है।

नक्षत्रों का विवेचन

नक्षत्रों का आरंभ अश्विनी से आरंभ कर भरण, कृत्तिका, रोहिणी, मृगशिरा, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, श्लेषा, मघा, पूर्वाफाल्गुनी, उत्तराफाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाति, विशाखा, अनुराधा ज्येष्ठा, मूल, पूर्वाषाढ़ा, उत्तराषाढ़ा, अभिजित्, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वाभाद्रपदा, उत्तराभाद्रपदा के बाद रेवती पर समाप्त होता है। इनका संक्षिप्त विवेचन इस प्रकार है।

1.अश्विनी (Beta Arietis)

नक्षत्रों में प्रथम अश्विनी नक्षत्र के देवता देवचिकित्सक अश्विनी कुमार हैं। यह घोड़े के मुख के आकार का तीन तारों का पुंज है। यह लघु, क्षिप्रसंज्ञक तथा तिर्यकमुख है। इसमें 30 मुहूर्त होते हैं। इसे पुल्लिंग माना जाता है तथा इसे यंत्र, मशीनरी, रसायन, कल-कारखाने, यात्रा, कम्यूनिकेशन, कम्प्यूटर, औषधि संबंधी कार्यों को करने के लिए श्रेष्ठ माना जाता है।

2.भरणी (Arietis)

योनिसदृश आकार वाले भरणी नक्षत्र के देवता यमराज है। इसमें दो तारे होते हैं। अधोमुख वाला भरणी नक्षत्र 15 मुहूर्त का होता है व पुल्लिंग नक्षत्र है। उग्र व क्रूर होने के कारण इसमें शुभ कार्य वर्जित बताए गए हैं। इन नक्षत्र में आखेट कर्म, अंतरिक्ष से धरती पर प्रहार करने वाले अस्त्र आदि के प्रयोग सफल होते हैं।

3.कृत्तिका (Eta Tauri)

यह नक्षत्र तीस मुहूर्त का होता है व इसके देवता अग्निदेव है। इसे सूर्य का नक्षत्र भी कहा जाता है। अधोमुख वाला कृत्तिका नक्षत्र पुल्लिंग माना जाता है तथा क्षुरिका के आकार का दिखाई देता है तथा स्वभाव से साधारण व मिश्र संज्ञावाला है। इसमें सामान्य कार्य यथा फसल की बुवाई, कटाई, मड़ाई, यज्ञ-हवन का प्रारंभ, अग्निस्थापन का कार्य आदि करना शुभ माना गया है।

4.रोहिणी (Alpha Tauri)

पांच तारों को यह नक्षत्र पुंज आकाश में लंबे त्रिभुज (बैलगाड़ी के ढांचे) के समान दिखाई देता है। यह पुल्लिंग नक्षत्र ध्रुव तथा स्थिर प्रकृति वाला व ऊर्ध्वमुखी है। इस नक्षत्र के स्वामी ब्रह्मा है। रोहिणी नक्षत्र को शुभ मानकर इसमें समस्त मांगलिक कार्यों को करने की आज्ञा दी गई है। साथ ही मंदिर,

भवन, किले, मीनारें, छत्र आदि बनवाने, तारों संबंधी कार्य करने, वायुयान उड़ाने संबंधी कार्य भी शुभ बताए गए हैं।

5.मृगशिरा (Lambda Orionis)

इस नक्षत्र के स्वामी चन्द्रदेव है। यह आकाश में तीन तारे (जो मृगों के सिर की भांति दिखाई देते हैं) का समूह है। 30 मुहूर्त वाला मृगशिरा नक्षत्र मृदु तथा मैत्री स्वभाव वाला तिर्यक मुख है। इस नक्षत्र में हाथी, घोड़ा, वाहन, खेती, नौकाविहार, खेल, वन तथा पौधों आदि से जुड़े कार्यों का करना शुभ माना जाता है।

6.आर्द्रा (Alpha Orionis)

तीक्ष्ण तथा दारूण स्वभाव वाला आर्द्रा नक्षत्र ऊर्ध्वमुखी है। यह स्त्रीलिंगी तथा विषैला नक्षत्र है। आर्द्रा नक्षत्र में विषाक्त प्राणियों तथा विष संबंधी कार्यों से दूर रहने की आज्ञा दी गई है। इसमें शुभ कार्य करने की मनाही की गई है।

7.पुनर्वसु (Beta Geminarium)

45 मुहूर्त वाला पुनर्वसु नक्षत्र 4 तारों का समूह है जो घर के आकार में दिखाई देता है। यह स्त्रीलिंगी नक्षत्र है जिसकी स्वामिनी देवमाता अदिति हैं। यह चर प्रकृति वाला शुभ नक्षत्र माना गया है जिसमें मांगलिक कार्य यथा गृहनिर्माण, वास्तुकर्म, नववधू प्रवेश, नए कार्य आरंभ करना शुभ तथा सौभाग्यदायी माना गया है।

8.पुष्य (Delta Cancri)

यह 30 मुहूर्त वाला स्त्रीलिंगी, लघु-क्षिप्रसंज्ञक तथा ऊर्ध्वमुखी नक्षत्र है। पुष्य नक्षत्र के स्वामी देवगुरु बृहस्पति है। गुरुवार तथा रविवार को पुष्य नक्षत्र होना अत्यन्त शुभ माना गया है। इस नक्षत्र में विवाह को छोड़कर अन्य सभी शुभ व मांगलिक कार्य करना उत्तम बताया गया है। परन्तु यदि शुक्रवार को पुष्य नक्षत्र हो तो उस समय उत्पात योग बनता है जिसमें कभी भी कोई भी शुभ कार्य आरंभ नहीं करना चाहिए।

9. Aश्लेषा (Epsilon Hydrae)

श्लेषा नक्षत्र को आश्लेषा नक्षत्र भी कहा जाता है। यह तीक्ष्ण, दारूण तथा अधोमुख माना गया है जिसमें खेती संबंधी शुभ कार्य किए जा सकते हैं परन्तु अन्य कोई भी कार्य नहीं करना चाहिए। श्लेषा नक्षत्र का स्वामी सर्प है। इस नक्षत्र में जन्म लेने वाले बच्चों के लिए शांति कर्म करवाना चाहिए।

10.मघा (Alpha Leonis)

स्वभाव से क्रूर मघा नक्षत्र 30 मुहूर्त वाला तथा स्त्रीलिंगी नक्षत्र है। मघा को क्रूर व उग्र प्रकृति वाला तथा अधोमुखी माना गया है। यह विष नक्षत्र है जिसके स्वामी पितृ हैं। इस नक्षत्र में विवाह, खेती, वृक्षारोपण, बाग-बगीचे संबंधी कार्य करना उत्तम बताया गया है परन्तु अन्य शुभ कार्य नहीं किए जाते। यह गण्डान्त नक्षत्र है, अतः इसके प्रारंभ की तीन घटी में कोई भी मांगलिक कार्य नही किया जाता है।

11.पूर्वाफाल्गुनी (Delta Leonis)

दो तारों से बना और खाट के आकार वाला पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र उग्र व क्रूर प्रकृति वाला अधोमुखी नक्षत्र है जिसमें 30 मुहूर्त होते हैं। इसके स्वामी भग देवता हैं। इस नक्षत्र को गणित, व्यापार संबंधी, खान खोदने संबंधी, कुंआ खोदने संबंधी, जमीन से जुड़े कार्य, भवन निर्माण कार्य आदि करने के लिए शुभ बताया गया है। प्राचीन काल में एक ही फाल्गुनी नक्षत्र माना जाता था जो कालान्तर में दो माने जानने लगे।

12.उत्तराफाल्गुनी (Beta Leonis)

इस नक्षत्र में भी दो ही तारे हैं। इसका आकार पर्यंक के समान है। स्त्रीसंज्ञक उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र 45 मुहूर्त वाला ऊर्ध्वमुखी, ध्रुव तथा स्थिर प्रकृति का नक्षत्र है। यह विवाह सहित सभी कार्यों विशेष रूप से विद्यारम्भ तथा विद्यासंबंधी कार्यों के लिए उत्तम माना गया है। इस नक्षत्र में कथा-प्रवचन, वास्तुकर्म, कुआं खोदना, पुस्तकालय, विद्यालय, प्रशिक्षण आदि कार्यों के लिए शुभ बताया गया है।

13.हस्त (Delta Carvi)

इस नक्षत्र में पांच तारे हैं जो हाथ के पंजे की आकृति के समान दिखाई देते हैं। तिर्यकमुखी तथा लघु प्रकृति वाले हस्त नक्षत्र के स्वामी सूर्यदेव हैं। इस नक्षत्र को लक्ष्मीदायी अर्थात् सौभाग्य देने वाला माना गया है। इस नक्षत्र को व्यापार, वाणिज्य तथा यज्ञ, हवन आदि के लिए विशेष फलदायी माना गया है परन्तु इस नक्षत्र में विवाह तथा अन्य समस्त धर्मकार्य भी किए जाते हैं। ज्योतिषीय मान्यताओं के अनुसार जब सूर्य हस्त नक्षत्र में हो तब यदि वर्षा होती है, उस समय फसल बहुत अच्छी होती है।

14.चित्रा (Spica)

अन्य नक्षत्रों के समान चित्रा अनेक तारों का समूह पुंज न होकर अकेला तारा है जो मोती जैसा चमकता है। इसके स्वामी त्वष्टा है। यह मृदु, मैत्री स्वभाव वाला तिर्यकमुखी नक्षत्र है। इस नक्षत्र को शुभ मानकर इसमें साझेदारी का व्यापार आरंभ करना, मैत्री संबंध बनाना, विवाह करना, राजनैतिक संबंध बनाना आदि कार्यों को करने की आज्ञा दी गई है।

15.स्वाति (Alpha Bootes)

यह नक्षत्र एक गणतारा प्रवाल सदृश है जिसके स्वामी वायुदेव हैं। यह तिर्यकमुखी चर नक्षत्र है तथा इसे विवाह नक्षत्रों में प्रमुख माना जाता है। स्वाति नक्षत्र में होने वाली वर्षा फसलों के लिए अमृत के समान मानी गई है। इस नक्षत्र में विवाह के अतिरिक्त यात्रा संबंधी, वाहनों का क्रय-विक्रय, प्रिटिंग संबंधी कार्य शुभ माने गए हैं।

16.विशाखा (Alpha Librae)

चार तारों के समूह से बना विशाखा नक्षत्र अधोमुखी, मिश्र तथा साधारण प्रकृति का माना गया है। इसके स्वामी इन्द्राग्नि है। इस नक्षत्र में अग्नि संबंधी सभी कार्य करना उत्तम बताया गया है। इस नक्षत्र में विद्युत तथा दूरसंचार संबंधी कार्य आरंभ करने पर सफलता मिलती है।

17.अनुराधा (Delta Scorpii)

इस नक्षत्र में चार या छह तारे रथ के आकार सदृश दिखाई देते हैं। यह मैत्रीसंज्ञक नक्षत्र है जिसे विवाह के लिए अति उत्तम बताया गया है। इस नक्षत्र में विवाह के अतिरिक्त सुगंधित पदार्थों का व्यवसाय, हाथी, घोड़ी, ऊंट अथवा वाहन संबंधी कार्य भी किए जा सकते हैं। अनुराधा नक्षत्र में चिकित्सा कार्य, सर्जरी आदि करने से रोगी के ठीक होने की संभावना बढ़ जाती है।

18.ज्येष्ठा (Alpha Scorpii)

ज्येष्ठा गण्डान्त का नक्षत्र है जिसके स्वामी इन्द्र हैं। इस नक्षत्र के अंत की तीन घटियां दोषपूर्ण होती है जबकि चतुर्थ चरण में किसी भी शुभ कार्य को करने के निषेधाज्ञा है। ज्येष्ठा नक्षत्र को राज्याभिषेक, पदग्रहण, शपथग्रहण, शासकीय कर्मचारियों की नियुक्ति हेतु उत्तम माना गया है। इस नक्षत्र में जन्म लेने वाले जातक के लिए गण्डान्त दोष हेतु शांतिकर्म करवाना चाहिए।

19.मूल (Lambda Saggittarii)

इस नक्षत्र में ग्यारह या बारह तारे माने जाते हैं। यह भी गण्डान्त नक्षत्र है जिसका स्वामी निर्ऋति नामक राक्षस है। इस नक्षत्र में विवाह के अतिरिक्त अन्य सभी शुभ कार्यों को करने की मनाही है। परन्तु इस नक्षत्र में उग्र व क्रूर कार्य तथा अस्त्र-शस्त्रों का अभ्यास आदि किए जा सकते हैं। मूल नक्षत्र में जन्म लेने वाले जातक के लिए शांति का अनुष्ठान करवाना चाहिए।

20.पूर्वाषाढ़ा (Delta Saggittarii)

चार तारों के समूह से बना पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र जलकर्म हेतु अति उत्तम माना गया है। इस नक्षत्र में तालाब, कुआं खोदना, नहर बनाना, तेल की लाइन बिछाना आदि कार्य किए जाते हैं। पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में उग्र कर्म तथा अग्नि कर्म भी किए जा सकते हैं।

21.उत्तराषाढ़ा (Sigma Saggittarii)

दो तारों के समूह से बना उत्तारषाढ़ा नक्षत्र ध्रुव-स्थिर प्रकृति वाला ऊर्ध्वमुखी नक्षत्र है। इस नक्षत्र के स्वामी विश्वेदेव हैं। इसे बुद्धिप्रदाता नक्षत्र भी माना गया है। उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में ध्वज, पताका, छत, तोरण, पुल/पुलिया बनवाना, मुकुट आदि का निर्माण करना, हल चलाना, बीज बोना, वाहन चलाना, रेलवे लाइन बिछाना आदि कार्य प्रशस्त हैं।

22.अभिजित् (Vega)

आकाश के सर्वाधिक चमकदार नक्षत्रों में एक अभिजित् अकेला ऐसा नक्षत्र है जो आकाशगंगा से बाहर है, अतः इसे मुहूर्त के अतिरिक्त अन्य कार्यों हेतु नहीं गिना जाता। अभिजित् नक्षत्र में तीन तारे त्रिकोणाकृति में दिखआई देते हैं। इस नक्षत्र को प्रतीक्षालय (यात्रागार) के निर्माण हेतु उचित माना गया है।

23.श्रवण (Alpha Aquilae)

यह नक्षत्र तीन तारों से मिलकर बना है जो विष्णु के तीन पगों के आकार में माने गए हैं। श्रवण नक्षत्र के स्वामी भगवान विष्णु है। यह ऊर्ध्वमुखी नक्षत्र है। इसमें यज्ञशाला का निर्माण, जनेऊ संस्कार, कृषिकार्य, कथावाचन, प्रवचन, धर्मग्रन्थों का लेखन, विवाह आदि, वाहन की सवारी, पहाड़ों की यात्रा, तीर्थयात्रा, दूरसंचार साधानों का उपयोग आदि करना शुभ माना गया है।

24. धनिष्ठा (Beta Delphini)

मृदंग के आकार सदृश दिखाई देने वाले चार तारों के समूह से बना धनिष्ठा नक्षत्र शुभ नक्षत्रों में माना गया है। इस नक्षत्र को विद्यारंभ हेतु श्रेष्ठ बताया गया है। इस नक्षत्र में बीज बोना, वाहन प्रयोग, यात्रा, जनेऊ संस्कार, रोजगार, वाणिज्य, व्यवसाय आदि कार्य प्रशस्त है।

25.शतभिषा (Lambda Aquarii)

शतभिषा नक्षत्र के स्वामी वरुण देव है। यह नक्षत्र मैत्री कार्य, वाणिज्य, व्यापार, चुनाव-प्रचार, प्रचार-प्रसार, क्रय-विक्रय, कृषि कार्य, यात्रा, गौशाला, गजशाला, अश्वशाला, गैरेज आदि के निर्माण तथा प्रवेश के लिए सर्वोत्तम माना गया है। इस नक्षत्र में जन्म लेने वाला जातक वाद-विवाद में कुशल, विद्वान तथा प्रभावशाली वक्ता होता है।

26. पूर्वाभाद्रपदा (Alpha Pegasi)

उग्र तथा क्रूर स्वभाव वाले पूर्वाभाद्रपदा नक्षत्र के स्वामी अजैकपात् नामक देव है। इस नक्षत्र को जलसंबंधी कार्यों हेतु यथा कुआं, तालाब, नहर, तड़ाग, पानी की टंकी, टैंक, जल पात्र आदि के निर्माण तथा उपयोग हेतु प्रशस्त बताया गया है। इस नक्षत्र को 'पूर्वाप्रौष्ठपदा' भी कहा जाता है।

27.उत्तराभाद्रपदा (Gamma Pegasi)

दो तारों के समूह से बने उत्तराभाद्रपदा नक्षत्र के स्वामी अहिर्बुध्न्य है। यह विवाह का नक्षत्र है जिसमें स्थिर कार्य, कृषि कार्य, कूप, तालाब, तड़ाग आदि का निर्माण, मैत्री संबंध बनाना, अश्वशाला का निर्माण, वाहन प्रयोग, संन्यासग्रहण, वानप्रस्थग्रहण, गृहत्याग आदि कार्य किए जाते हैं। उत्तराभाद्रपदा नक्षत्र को 'उत्तरप्रौष्ठपदा' भी कहा जाता है।

28.रेवती (Zeeta Piscium)

32 तारों वाले रेवती नक्षत्र को 'पौष्ण' भी कहा जाता है, इसके देवता पूषा है। रेवती नक्षत्र में धार्मिक कार्य, विवाह, मैत्रीकर्म आदि कार्य करना शुभ होता है। रेवती नक्षत्र में कृषि कार्य, मकान बनाना, यात्रा करना, देवप्रतिमा की प्रतिष्ठा करना आधि कार्य श्रेष्ठ बताए गए हैं, परन्तु धनिष्ठा के उत्तरार्ध से रेवतीपर्यन्त तक के नक्षत्र पंचक कहलाते हैं जिनमें कोई भी शुभ कार्य नहीं करने की आज्ञा दी गई है।

1 .अश्विन नक्षत्र

1) अंग्रेजी नाम- केस्टर और पोलोक्स

2)प्रथम नक्षत्र

3)मेष राशी मे 0 से 20 डिग्री13 मिनट तक अश्विन नक्षत्र का विस्तार होता है।

4) राशि स्वामी - मंगल ग्रह

5)विशोंत्तरी दशा स्वामी - केतु

6) देवता -अश्ववी कुमार (यह देवों के चिकित्सकों के रूप में प्रसिद्धि है।)

7) वर्ण- क्षत्रिय

8)वश्य - चतुष्पद

9) गण- देव गण

10) योनि- अश्व (घोड़ा)

11)योनि वैर - महिषी

12) रंग - रक्त के समान लाल

13)शब्द - चू, चे,चो,ला

14) प्रतीक - अश्व का सिर

15) शारीरिक बनावट - सुंदर और बड़ी आँखें, व्यापक माथे, सामान्य नाक।

16) व्यवहार - सुखदायक व्यवहार, भगवान से डरने वाले, बुद्धिमान,फैसले में सशक्त, बचकाना व्यवहार, गतिशील, तेज कार्रवाई (बस सोचा और बिना समय खोये करवाई), शोधकर्ता(कई मामलों में विशेषज्ञ),कार्रवाई करन वालेे, नैतिकता, बातों में रुखापन, संगीत प्रेमी, खेल प्रेमी, हिम्मतवाला

17)पेशा - चिकित्सकों, साहसिक कार्य, खेलों से संबंधित कार्य, सैन्य और सेना से संबंधित नौकरियां, कानून से संबंधित कार्य, चिकित्सा से संबंधित कार्य, रिसर्च से संबंधित काम।

18) नियम के अनुसार 23वा नक्षत्र प्रत्येक नक्षत्र के लिए विनाशकारी होता है। अश्विनी के लिए 23वा नक्षत्र धनिष्ठा(स्वामी-मंगल) है।

19)दूसरा नियम है प्रत्येक नक्षत्र से 3, 5, और 7 वीं बुरा होता है तो इस के अनुसार

अश्विनी के लिए

विपत्त नक्षत्र (3वीं नक्षत्र) - कृतिका,उत्तरफाल्गुणी,उत्तराषाढ़ा

प्रत्यारी नक्षत्र(अश्विनी से 5वीं)- मृगशिरा, चित्रा, धनिष्ठा।

बाधा नक्षत्र (अश्विनी से 7) - पुनर्वसु, विशाखा, पुर्वभद्रा पद

20) 8वीं और 9वीं नक्षत्र जन्मनक्षत्र के मित्र और अतिमित्र होते है। इसलिएअश्विनी के लिए इस श्रेणी में है-

पुष्य,अश्लेषा, अनुराधा, ज्येष्ठा,उत्तरभद्रापद, रेवती

21)समान्यतः हस्त और स्वाति अश्विनी के साथ असहज महसूस कर रहे हैं ।

22) अश्विनी शतभिषा के साथ सबसे अधिक सहज महसूस करते है।

भरणी नक्षत्र -2

1) अंग्रेजी नाम- Arietis / Muscae

2) राशि स्थान - मेष राशी मे 13डिग्री 20 मिनट से 26डिग्री 40 मिनट तक

3)राशी स्वानी - मंगल ग्रह

4)नक्षत्र के विशोंतरी दशा स्वामी - शुक्र

5) नक्षत्र के पौराणिक देवता - यम देव(मृत्यु के देवता)

6) प्रतीक- योनि (महिला यौनांग)

7) वर्ण- क्षत्रिय

8)वश्य - चतुष्पद

9) गण- मानव

10) योनि - गज

11) योनिवैर - सिंह

12) रंग- रक्त लाल

13)वर्ण -ली, लू, ले, लो

14) नाडी- मध्य

15) शारीरिक बनावट - बड़ी सुंदर अर्थपूर्ण आँखें, बड़ा चेहरा, बड़े गर्दन, आकर्षक या मनमोहक मुस्कान

16) व्यवहार - प्रायोगिक (बनाते है,पोषण करते है फिर नष्ट करते है,) विपरीत लिंग के प्रति आकर्षण, विलासिता, ईर्ष्यालु, अपना नुकसान के संबध मे भावनात्मक, बहुमुखी प्रतिभा, आलोचक(अपनी भावना को वयक्त करने मे स्वयं पर कोई नियंत्रण नही होताहै।),बिना मतलब के समय को बर्बाद करनेवाले(क्योंकि वो ऩये नये प्रयोग करते रहते है),सही या गलत की अद्भुत परख, नैतिकता, अच्छे दिल वाले ।

17) पेशा -भरणी नक्षत्र के मंगल और शुक्र दोनो ग्रह के ग्रहीय प्रभाव मे होेता है इसलिए पेशा क्षेत्र में दोनों से प्रभावित होते है। मंगल शारीरिक क्षमता देता है और शुक्र खूबसूरती से प्रस्तुत करने की क्षमता, अतः गायन,नृत्य,अभिनय,चित्रकारी, सर्जन, प्रशासक के रूप में,प्रायोगिक नौकरियों, मास्टर ऑफ बिजनेस मैनेजमेंट, व्यापार,कानूनी कार्यकर्ता, लेकिन एेसा देखा जाता वै अपनी नौकरी बदलते रहते है।

18) सबसे विनाशकारी नक्षत्र- शतभिषा

19)विपत्त नक्षत्र - भरणी लिए यह चंद्रमा के द्वारा शासित नक्षत्र- रोहिणी हस्ता, श्रवणा

20) प्रत्यारी नक्षत्र (5 वीं नक्षत्र) - भरणी लिए यह राहु द्वारा शासित नक्षत्र - आद्रा, स्वाति, और शतभिषा

21) बाधा नक्षत्र (7वीं नक्षत्र) - भरणी के लिए यह शनि द्वारा शासित नक्षत्र -पुष्य, अनुराधा,उत्तरभद्रापद है

22) मित्र नक्षत्र - बुध और केतु शासित नक्षत्र - अश्विनी,अश्लेषा, माघा,ज्येष्ठा,मूला, रेवती

23) शेष नक्षत्र अच्छा और तटस्थ विचार किये जाते है।

24) भरणी 27नक्षत्र के द्वितीय नक्षत्र है।

25) भरनी सबसे चमकिला और 27नक्षत्र में सक्रिय प्रकृति का है।

26) भरनी एक संतुलित नक्षत्र है ।

27) भरनी एक स्त्रीलिंग नक्षत्र है।

28) भरनी पित्त दोष का संकेत देता है।

29) भरनी एक उग्र नक्षत्र है ।

30) गुण- तामसिक नक्षत्र

31) तत्व - भू तत्व

32) दिशा- पाताल(नीचे की) की तरफ

कृतिका नक्षत्र

1)तृतीय नक्षत्र

2) अंग्रेजी नाम- Alcyone/Tauri

3) नक्षत्र स्थिती– 26डिग्री 40 मिनट मेष राशी से 10डिग्री वृष राशी

4)राशी स्वामी – प्रथम पद मेष राशी मे स्थित होता है अतः राशी स्वामी मंगल है तथा अंतिम 3पद वृष राशी मे स्थित है अतः राशी स्वामी शुक्र है ।

5) विशोंतरी दशा के शासक ग्रह- सूर्य

6) देवता -अग्नि देव /कृतिका देवी भगवान कार्तिकेय की माँ

7)वर्ण - कृतिका क्षत्रिय की तरह व्यवहार करता है। लेकिन कुण्डली मिलान में प्रथम पद क्षत्रिय और अंतिम 3पद वैश्य पर विचार किया जाता है।

8) वश्य - चतुष्पद

9) गण- राक्षस

10) योनि- मेष (भेड़)

11)योनि वैर - वानर

12) नाडी- अन्त

13) दोष- कफ दोष

14) गुण - राजसिक (रजो)

15) दिशा- पाताल की ओर

17) तत्व - भू तत्व

18) प्रकृति - मिश्रित (तीक्ष्ण और मृदु)

19) श्रेणी- संहारक(विघटन)

20) लिंग- स्त्री लिंग

21) गतिविधि - एक्टिभ

22) रंग - सफेद

23) अक्षर - अ,इ,उ,ए

24) प्रतीक - तेज उस्तरा या काटने वाले धारधार उपकरण

25) व्यवहार - प्रतीक के रूप में कटर है इसलिए तेज दिमाग, तीक्ष्ण व्यवहार,पैनिक,फैंक

अग्नि देव देवता है इसलिए आक्रामक, ऊर्जावान, अत्यंत गुस्सा वाला,नष्ट करने के लिए गंभीर कार्रवाई करने वाला , हमेशा आरोप सहने वाला, गैर जिम्मेदाराना, शुद्ध हृदय,

(वे झूठ पकड़ने की शक्ति है और कारण प्रकृति में औदार्य को इतनी कठोरता से कहा क्योंकि) आध्यात्मिक, ईमानदार, मेहनती, मूडी, अच्छा तर्क,नकारात्मक तार्किक आलोचना करने वाला(क्योकिं उनमे झूठ पकड़ने की क्षमता होती है इसलिए वै अपनी फैंकनेंस के कारण रुखापन के साथ सामने वाले के झूठ को उजागर कर देते है।)

26) पेशा - सूर्य के कारण - प्रशासनिक,लीडर, खगोलविदों, चिकित्सा, यार्न, बहुराष्ट्रीय कंपनी आदि

अग्नि देव देवता है अतः- अाग से संबंधित पेशा जैसे फायर विभाग, विस्फोटक, बढ़ई, हथियार, आध्यात्मिक कार्य

क्षत्रिय वर्ण है अतः सशस्त्र सेना, पुलिस, (यह भी ध्यान दें कि युद्ध, लड़ाई, सेना, विवादों विशेष रूप से हिंसक प्रकार के हथियार से लड़े जाने वाले लड़ाई कृतिका से संबंधित होते है।)

धारधार हथियार प्रतिक है इसलिए

कसाई, दर्जी, नाई, तीव्र उपकरण निर्माता, ड्रिलिंग (नीचे दिशा के कारण यह दर्शाता है), इंजीनियरिंग, आदि -इनके अलावा वकील, कलाकृति, खोजी कार्य, मेटा चिकित्सक, कुशल जादूगर, सोना और धन से संबंधित कार्य

27)कृतिका के लिए विनाशकारी नक्षत्र(23वीं नक्षत्र) पूर्वभाद्रपद है।

28) सबसे सहज नक्षत्र - पुष्य नक्षत्र

29) सबसे असहज नक्षत्र -पूर्वाषाढ़ और श्रवणा नक्षत्र

30)विपत्त नक्षत्र - मृगशिरा, चित्रा, धनिष्ठा (मंगल द्वारा शासित नक्षत्र)

31) प्रत्यारी नक्षत्र - पुनर्वसु,विशाखा,पूर्वभाद्रपद (गुरु द्वारा शासित नक्षत्र)

32)बाधा नक्षत्र - बुध द्वारा शासित नक्षत्र-

अश्लेषा,ज्येष्ठा, रेवती

33) मित्र नक्षत्र - केतु और शुक्र द्वारा शासित नक्षत्र - अश्विनी, भरणी, माघा, पूर्व फाल्गुणी,मूला,पूर्वाषाढ़

4.रोहणी नक्षत्र

1)चतुर्थ नक्षत्र

2) अंग्रेजी नाम- एल्डेबारन / अल्फा टौरी

3) प्रतीक - एक बैल गाड़ी

4)नक्षत्र स्थिति- 10डिग्री से 23 डिग्री 20 मिनट वृष राशी मे

5) राशि स्वामी - शुक्र

6)विशोंतरी दशा स्वामी - चंद्रमा

7) देवता - ब्रह्मा

8) वर्ण- शूद्र, लेकिन कुण्डली मिलान में यह वैश्य के रूप में विचार किया जाता है।

9)वश्य - चतुष्पद

10) गण - मनुष्य

11) योनि - सर्प

12) योनि वैर - नकुल

13) रंग - सफेद

14)वर्ण - ओ, वा, वी ,वू

15) नाड़ी- अन्त

16) स्वाभव - संतुलित

17) प्रकृति- सृष्टि

18) दिशा- ऊपर की ओर

19) लिंग- स्त्री लिंग

20) दोष- कफ

21) रोहिणी फिक्स्ड / स्थायी / ध्रुव नक्षत्र है।

22) गुण - राजसिक (रजो)

23)तत्व - भू तत्व

24)रोहणी चंद्रमा की सबसे प्रिय पत्नी है।

25) शारीरिक बनावट - समान्यतः रोहणी जातक आकर्षक होते है।वो असानी से लोगो का ध्यान आकर्षित कर लेते है। उनकी शारीरिक बनावट मे सेक्स अपील होगी है जो विपरीत लिंग को आसानी से आकर्षित कर लेती है। उनकी आंखों मे गजब की कशिस होती है।शरीर आम तौर पर अच्छी तरह से विकसित और मांसपेंशिया भी अच्छी तरह से विकसित होती है मतलब गदराया हुआ शरीर होता है।

26) व्यवहार – ब्रह्मा देवता है अतः वे प्रकृति में रचनात्मक होते है, कल्पना शक्ति रोहणी का एक अद्भुत गुण है । और रोहणी मे अपनी कल्पना को रचना मे परिवर्तित करने की क्षमता है। रोहणी आध्यात्मिक होते है।

चंद्रमा के कारण वे भावुक, चंचल और क्षणिक गुस्सा वाले होते है। अपने आप का दिखावा करने वाले, भ्रमित दिमाग वाले(अपनी नकारात्मकता और चंचलता के कारण निर्णय लेने मे भ्रमित), दिमाग की जगह दिल से निर्णय लेने वाले, स्वतंत्र मस्तिषक वाले , बहुत लगाव या बहुत अलगाव प्रकार प्रकृति,मेहनती पर सही दिशा मे मेहनत नही करते है।

शुक्र के कारण वे विलीसिता की ओर आकर्षित, भाषण और व्यवहार में मिठास और नम्रता,प्रकृति में स्त्रीसुलभ आचरण (दो महिला ग्रह के प्रभाव के कारण)।

27)पेशा - प्रतीक बैलगाड़ी है अतः कृषि, श्रम वाले काम, दुग्ध उत्पाद, सभी कृषि से संबंधित काम है।

भगवान ब्रह्मा के कारण रचनात्मक प्रकार के कार्य जैसे रचनात्मक निर्देशक के रूप में,

आकर्षित शरीर के कारण - मॉडल, फैशन डिजाइनर आदि

चंद्रमा और शुक्र के कारण नृत्य, संगीत आदि कला से संबंधित कार्य, ज्वैलरी डिजाइनिंग, कल्पनाशील कार्य (जैसे विज्ञापन, फोटोग्राफी, संपादन, लेखन),मार्कैटिंग(लोगों को आसानी से आकर्षित करने की क्षमता और अच्छी तरह से प्रस्तुतीकरण के कारण)

28)रोहणी के लिए सबसे विनाशकारी नक्षत्र उत्तराभाद्रपद है।

29)रोहणी के लिए सबसे सहज नक्षत्र मृगशिरा है।

30)सबसे असहज उत्तराषाढ़ नक्षत्र है।

31)विपत्त नक्षत्र - राहु द्वारा शासित नक्षत्र - आद्रा, स्वाति, शतभिषा

32)प्रत्यारी नक्षत्र -शनि द्वारा शासित नक्षत्र - पुष्य, अनुराधा, उत्तराभाद्रपद

33)बाधा नक्षत्र - केतु द्वारा शासित नक्षत्र - माघा, मूला , अश्विनी

34) मित्र और अति मित्र नक्षत्र -शुक्र और सूर्य द्वारा शासित नक्षत्र सत्तारूढ़ - पुर्वफाल्गुणी, उत्तरफाल्गुणी, पूर्वाषाढ़ा , उत्तराषाढ़, भरणी और कृतिका

मृगशिरा नक्षत्र

1) 5 वीं नक्षत्र

2) अंग्रेजी नाम- Orionis

3)नक्षत्र स्थित - 23डिग्री 20मिनट वृष से 6डिग्री 40मिनट मिथुन राशी

4) राशि स्वामी - प्रथम 2पद मृगशिरा राशि स्वामी शुक्र है और अंतिम 2 पद राशी स्वामी बुध है।

5) विशोंतरी दशा स्वामी - मंगल

6) देवता - सोमदेव (चंद्र देव)

7) प्रतीक - हिरण के सिर/ शिकारी

8) जाति (वर्ण) - दास लेकिन कुण्डली मिलान में प्रथम 2पद वैश्य और अंतिम 2पद शूद्र के रूप में विचार किया जाता है।

9)वश्य - प्रथम 2पद चतुष्पद है और अंतिम 2पद मानव है।

10) गण - देव गण

11) योनि - सर्प

12)योनिवैर- नकुल

13) गुण - तामसिक (तमो)

14) नाडी- मध्य

15) दोष- पित्त

16) तत्व - भू तत्व

17) लिंग - नपुंसक

18) प्रकृति - मृदु

19) गतिविधि - सहनशील

20)प्रकृति - स्थिती

21) दिशा- किनारे से

22) रंग- चाँदी के रंग

23)वर्ण – वे, वो,का,की

24) सबसे सहज नक्षत्र - रोहणी

25) सबसे असहज नक्षत्र- उत्तराषाढ़ नक्षत्र

27) सबसे विनाशकारी नक्षत्र - रेवती

28) मित्र नक्षत्र - सूर्य और चंद्रमा के द्वारा शासित नक्षत्र - कृतिका, उत्तरफाल्गुणी, उत्तराषाढ़ा, रोहणी, हस्ता, श्रवणा

29)विपत्त नक्षत्र - गुरु द्वारा शासित नक्षत्र - पुनर्वसु, विशाखा, पूर्वभाद्रपद

30)बाधा नक्षत्र - शुक्र द्वारा शासित नक्षत्र - पुर्वफाल्गुणी, पूर्वाषाढ़ा, भरणी

31)प्रत्यारी नक्षत्र - बुध द्वारा शासित नक्षत्र - अश्लेषा, ज्येष्ठा, रेवती

32) शारीरिक बनावट – अच्छी लुक, लंबा, मजबूत शरीर

33)स्वाभव - मृग का प्रतीक यह दर्शाता है कि - सक्रिय, खोजी, हमेशा सतर्क आगामी खतरों के बारे में, नई चीजों को खोजने वाले ,ज्ञान की खोज का प्रयास करने वाले , शक्की प्रकृति, मुयायना करने वाले ,प्रकृति मृदु है जो नरम वाणी का संकेत देता है , अच्छा वक्ता,जेंनटल मैन, साफ दिल,

अन्य व्यवहार - त्वरित कार्रवाई , तेज दिमाग, संवेदनशील, अशांत चित्त(मानसिक रूप से परेशानी), स्वार्थी,आराम नहीं करने वाले, बेचैंन, घबराहट प्रकृति वाले, तीक्ष्ण, रोमांटिक, सेक्सुअलि एक्टिभ

34)पेशा - लेखक, अनुसंधानकर्ता, वास्तुकार, प्रशासक, अभिनेता, संगीत, शिक्षक, कवि, ज्योतिषी, इंजीनियर्स, संचारक, रियल एस्टेट, यात्रा से संबंधित नौकरियों, कपड़ा, वस्त्र, दर्जी, पशु ट्रेनर।

आद्रा नक्षत्र

1)छठा नक्षत्र

2) अंग्रेजी नाम- अल्फा Orionis

3) नक्षत्र स्थिति - 6 डिग्री 40 मिनट से 20डिग्री मिथुन राशी मे

4) राशि स्वामी - बुध

5)विशोंतरी दशा स्वामी - राहु

6) देवता - रुद्र देव (भगवान महादेव के विनाशक स्वरुप)

7) प्रतीक - आंसू की बूंद

8)आद्रा का अर्थ - कुहासा या वायुमंडल मे नमी

9) आद्रा को भाग्य की देवी के रूप में भी पूजा जाता है।

10)वर्ण - कसाई, लेकिन कुण्डली मिलान में यह शूद्र के रूप में विचार किया जाता है।

11)वश्य - द्विपद(मानव)

12) क्रिया - संतुलित

13) प्रकृति- संहारक (विघटन)

14) दिशा - ऊपर की ओर

15)लिंग - स्त्री लिंग

16) नाड़ी- आदि

17) दोष- वात्त

18)स्वाभव - तीक्ष्ण

19) गुण - तामसिक (तमो) गुण

20) गण - मानव

21) योनि- श्वान (कुत्ता)

22) योनिवैर -मृग (हिरण)

23) तत्व - जलीय

24) रंग- हरा

25)वर्ण- कु,घ,ड,छ

26)सबसे सहज नक्षत्र - मूला

27)सबसे असहज नक्षत्र - अनुराधा और ज्येष्ठा

28)सबसे विनाशकारी नक्षत्र - अश्विनी नक्षत्र

29)विपत्त नक्षत्र - शनि द्वारा शासित नक्षत्र -पुष्य, अनुराधा, उत्तराभाद्रपद

30)प्रत्यारी नक्षत्र - केतु द्वारा शासित नक्षत्र - माघा, मूला, अश्विनी

31)बाधा नक्षत्र - सूर्य शासित नक्षत्र - उत्तरफाल्गुणी, उत्तराषाढ़ , कृतिका

32) मित्र नक्षत्र - चंद्रमा और मंगल ग्रह द्वारा शासित नक्षत्र - हस्ता, रोहणी, चित्रा,श्रवणा,धनिष्ठा, मृगशिरा

33) व्यवहार - आद्रा का प्रतीक है कुहासा या आंसू की बूंद यह दर्शाता है कि जातक अत्यंत भावुक,भ्रमित,बहुत जल्द स्वरुप बदलने वाले होते है।

रुद्र देव देवता है जो आध्यात्मिक के संकेत देता है साथ ही जातक को योगी भी बनाता है। साथ ही वे क्रूर या गुसैल जो विध्वंसकता की हद तक हो सकता है ।

राहु द्वारा शासित है और राशि स्वामी बुध है जो उत्तम संवादकर्ता , छिपा हुया सोच, शक्की प्रकृति , कल्पना क्षमता, द्विअर्थी दिमाग वाले, भय, दुख, अपने लक्ष्यों के बारे में मेहनती, वे लोगों को अपने कार्य की वजह से आकर्षित करने की क्षमता होती है।दूसरो की सहायता करते है साथ ही बहुत आक्रामक दिमाग वाले होते है।

35)पेशा – बुध राशी स्वामी है जो परिवहन, संचार, व्यापार और वाणिज्य, वित्तीय नौकरियों का संकेत देता है।

जलीय नक्षत्र है जो शिपिंग उद्योग या पानी से संबंधित है पेशा का जो संचार या यात्रा से भी संबंधित हो।

राहु द्वारा शासित होने के कारण राजनेता, सेल्समैन, छल करने वाले पेशा, द्विअर्थी भाषण करने वाले और धोखाधड़ी से संबंधित पेशा ।

रुद्र देवता है जो विध्वंसक शक्ति या जीव के विनाश वाले पेशा के संकेत देते है जैसे परमाणु ऊर्जा अनुसंधान के रूप में, जीवो के संहार से संबंधित कार्य (जैसे वायरस को नष्ट करने से संबंधित चिकित्सा क्षेत्र या रसायन क्षेत्र) इत्यादि

पुनर्वसु नक्षत्र

1) 7वीं नक्षत्र

2) अंग्रेजी नाम - Geminorium

3)नक्षत्र स्थिती - 20डिग्री मिथुन से 3 डिग्री 20 मिनट कर्क राशी

4)राशी स्वामी - पुनर्वसु राशि के प्रथम तीन पद के राशी स्वामी बुध है और अंतिम पद के लिए राशि स्वामी चंद्रमा है ।

5) विशोंतरी दशा स्वामी - गुरु

6) नक्षत्र देवता - देवी अदिती है।

7) प्रतीक - धनुष और तीर के तरकश

8) वर्ण - वैश्य लेकिन कुण्डली मिलान मे मिथुन राशि में गिरने वाले प्रथम 3पद मिलान शूद्र और कर्क मे गिरने वाले अंतिम पद ब्राह्मण विचार किया जाता है।

9)वश्य -प्रथम 3पद मानव और अंतिम पद जलचर है।

10)स्वाभव - धैर्यवान

11)प्रवृति - चर

12)प्रकृति - सृष्टि

13)गुण - सात्विक (सत्तगुण)

14) गण - देव

15) योनि- मार्जर (कैट)

16)योनिवैर - मूषक

17) दिशा - बग़ल से

18)लिंग - पुरुष

19) नाडी- आदि

20) दोष - वात्त

21)तत्व - जलीय

22)रंग - ग्रे कलर या लेड कलर

23)वर्ण - के, को, हा, ही

24)सबसे विनाशकारी नक्षत्र - भरणी

25)असहज नक्षत्र - माघा, पुर्वफाल्गुणी

26)सहज नक्षत्र - अश्लेषा नक्षत्र

27)विपत्त नक्षत्र - अश्लेषा, ज्येष्ठा , रेवती (बुध द्वारा शासित नक्षत्र)

28)प्रत्यारी नक्षत्र - पुर्वफाल्गुणी, पूर्वाषाढ़ा, भरणी (शुक्र द्वारा शासित नक्षत्र)

29)बाधा नक्षत्र -हस्ता, श्रवणा, रोहणी (चंद्रमा द्वारा शासित नक्षत्र)

30) मित्र नक्षत्र -मंगल और राहु द्वारा शासित नक्षत्र -चित्रा, स्वाति,धनिष्ठा, शतभिषा, मृगशिरा, आद्रा

31) शारीरिक बनावट - मध्यम कद , धीरज युक्त लुक, हैंडसम

32)व्यवहार - बृहस्पति और जलीय तत्व दर्शाते है कि आध्यात्मिक, धार्मिक, ज्ञानवान, भौतिकवादी दृष्टिकोण का अभाव , अच्छे दिल वाले, सच्चाई, बड़प्पन, पवित्रता आदि

पुनर्वसु नाम का मतलब है फिर से बसना या पुणर्निर्माण और यह है कि सृष्टि नक्षत्र है जो दर्शाता है कोई नकारात्मकता नहीं मतलब पूर्ण रुप से सकारात्मक (किसी भी कठिन परस्थिति में हमेशा खुश रहने का स्वाभव), किसी भी चीज के पूणर्निमाण की क्षमता किसी भी स्तर पर ,किसी भी समय ,चंचल स्वभाव, चैलेंज को स्वीकार करने की क्षमता,

इसके अलावा वे अन्य को सहायता करते है , अंदरुनी गुप्त प्रकृति की स्वाभव , बोलचाल मे निपुण

33) पेशा - आध्यात्मिक शिक्षक, पुजारी, धार्मिक गतिविधि से संबंधित कोई भी काम, मनोवैज्ञानिक,रहस्यवादी, दार्शनिक (सभी गुरु के कारण)

पुन सृजन की शक्ति है अतः वास्तुकला, सिविल इंजीनियर, नए विचार, रखरखाव का काम, लेखन, वैज्ञानिकों) राशि स्वामी बुध और चंद्रमा है अतः -अभिनय, नाटक, आदि

पुष्य नक्षत्र

1) 8वीं नक्षत्र

2) अंग्रेजी नाम- Cancri

3)नक्षत्र स्थिती – कर्क राशी मे 3 डिग्री 20मिनट से 16 डिग्री 40 मिनट तक

4) राशि स्वामी - चंद्रमा

5)विशोंतरी दशा स्वामी - शनि

6)नक्षत्र देवता - देवगुरु बृहस्पति

7) प्रतीक - गाय का थन/पुष्प

8)वर्ण - क्षत्रिय लेकिन कुण्डली मिलान मे ब्राह्मण

9)वश्य - जलचर

10)गण - देव गण

11) योनि - मेष

12) योनि वैर – वानर

13) नाडी - मध्य

14)स्वाभव - धैर्यवान

15) प्रकृति- स्थिती

16) गुण - तामसिक(तमो)

17) दोष- पित्त दोष

18) लिंग - पुरुष लिंग

19) दिशा- आकाश की ओर

20) तत्व -जलीय

21) प्रकृति - क्षिप्र

22) रंग - लालिमा युक्त कृष्ण वर्ण

23)वर्ण - हू,हे,हो,डा

24) पुष्य नक्षत्र का पुराना नाम तिस्या भी है

25) पुष्य वृद्धि ,शुभता और सिद्धी का संकेत देता है।

26) व्यवहार - पुष्य नक्षत्र चंद्रमा, बृहस्पति और शनि का प्रभाव मे होेता है अतः अध्यातमिकता, धार्मिक,मेहनती, सहायक, दयालुता,संवेदनशील, ईमानदार, शांत दिमाग, व्यवस्थित कार्यकर्ता, अच्छे

सलाहकारों, दूसरे के लिए संरक्षक की तरह देखभाल करने वाले, हमेशा भीतरी दिल में स्वार्थी लेकिन अच्छाई का दिखावा करने वाला, विस्तारवादी, शिष्टाचार और शिष्टता, अभिमानी जुनून, धैर्य

27) पेशा - कृषि व्यापारी, धार्मिक नेताओं, आध्यात्मिक शिक्षक, दार्शनिक, सलाहकार, परामर्शदाता, मनोवैज्ञानिक, नियोजक, डेवलपर या विकास के काम, प्रशासन, अनुसंधान, राजनीति, शिक्षकों, प्रोफेसर, भूवैज्ञानिक और जीववैज्ञानिक

28)सबसे विनाशकारी नक्षत्र - कृतिका

29)विपत्त नक्षत्र - केतु द्वारा शासित नक्षत्र- माघा, मूला, अश्विनी

30)प्रत्यारी नक्षत्र - सूर्य द्वारा शासित नक्षत्र -उत्तरफाल्गुणी नक्षत्र,उत्तराषाढ़,कृतिका

31)बाधा नक्षत्र - मंगल ग्रह द्वारा शासित नक्षत्र -चित्रा, धनिष्ठा, मृगशिरा

32) मित्र नक्षत्र - राहु और बृहस्पति द्वारा शासित नक्षत्र - स्वाति, विशाखा, शतभिषा, पूर्वभाद्रपद,आद्रा, पुनर्वसु

33)सबसे सहज नक्षत्र- कृतिका

35) सबसे असहज नक्षत्र- पूर्वाषाढ़ा और श्रवणा

अश्लेषा नक्षत्र

1) 9 वीं नक्षत्र

2) अंग्रेजी नाम- Hydrae

3)नक्षत्र स्थिति-16डिग्री 40मिनट से 30डिग्री तक कर्क राशी मे

4) राशि स्वामी- चंद्रमा

5)विशोंतरी दशा स्वामी - बुध

6)देवता- नाग देव

7) प्रतीक - कुंडलित सर्प

8) वर्ण - मल्लेचछ लेकिन कुण्डली मिलान में ब्राह्मण

9) वश्य - जलचर

10)गण - दानव

11)गुण - सात्विक

12)नाडी- अन्त़

13)स्वाभव - सक्रिय

14)प्रकृति - संहारक

15) दिशा- नीचे की ओर

16)लिंग - स्त्री लिंग

17) दोष - कफ दोष

18) नेचर - तीक्ष्ण

19)रंग - कृष्ण लाल रंग

20)वर्ण -डी ,डू डे डो

21) योनि - मार्जर

22) योनि वैर - मूषक

23) तत्व – जलीय

24)सबसे विनाशकारी नक्षत्र - रोहणी

25) विपत्त नक्षत्र - शुक्र द्वारा शासित नक्षत्र - पुर्वफाल्गुणी, पूर्वाषाढ़ा , भरणी

26)प्रत्यारी नक्षत्र - चंद्रमा द्वारा शासित नक्षत्र - हस्ता, श्रवणा , रोहणी

27)बाधा नक्षत्र - राहु द्वारा शासित नक्षत्र - स्वाति, शतभिषा, आद्रा

28) मित्र नक्षत्र - बृहस्पति और शनि द्वारा शासित नक्षत्र - विशाखा , अनुराधा, पुर्वभद्रापद, उत्तरभद्रापद , पुनर्वसु, पुष्य

29) सबसे सहज नक्षत्र - पुनर्वसु

31) सबसे असहज नक्षत्र - माघा और पुर्वफाल्गुणी

32) व्यवहार -देवता नाग देव है अतः अपने व्यवहार में शर्मीलापन , असुरक्षित महसूस करना, त्वरित प्रतिक्रिया ,छिपा हुया स्वाभव, दिखने के मामले में मुलायम लेकिन भीतर दिल से बहुत खतरनाक, संदिग्ध प्रकृति, भावनात्मक, बेईमान, बेशर्म, स्वतंत्रता प्रेमी होते है।

चंद्रमा ,बुध, और जलीय प्रभाव के कारण – भावनाओं में भ्रम, अच्छी गणना और नियोजन क्षमता, कूल लेकिन तुरंत गुस्सा वाले, बुद्धिमान, आकर्षित करने की क्षमता, अपनी बातो पर कायम नही रहने वाले मतलब पलटीबाज, महत्वाकांक्षी, नकारात्मकता

33)पेशा - जहर से संबंधित है किसी भी प्रकार का काम, सांप से संबंधित पेशा, रहस्यवाद, ज्योतिष, राजनीति, व्यापार, कानून से संबंधित काम, मनोरंजन से संबंधित कोई भी काम

माघा नक्षत्र

1) 10 वां नक्षत्र

2) अंग्रेजी नाम- अल्फा Leonis / रेगुलस

3)नक्षत्र स्थिती - 0डिग्री सिंह राशी से13 डिग्री 20 मिनट सिंह राशी तक

4) राशि स्वामी - सूर्य

5)विशोंतरी दशा स्वामी – केतु

6)देवता - पितृ देवता

7) प्रतीक - राजकीय सिंहासन कक्ष

8)वर्ण - शूद्र लेकिन कुण्डली मिलान में यह क्षत्रिय विचार किया जाता है।

9)वश्य - चतुष्पद (वनचर)

10) गण- दानव

11) गुण- तामसिक (तमो)

12) योनि- मूषक

13)योनि वैर - मार्जर

14) नाड़ी- अन्तय

15) दोष - कफ

16)तत्व -जलीय

17) गतिविधि - सक्रिय

18) प्रकृति -उग्र

19) लिंग - स्त्री लिंग

20) दिशा- नीचे की ओर

21)प्रकृति - सृष्टि

22)सबसे विनाशकारी नक्षत्र - मृगशिरा

23) सबसे सहज नक्षत्र - पुर्वफाल्गुणी

24)सबसे असहज नक्षत्र - पुनर्वसु , अश्लेषा

25)विपत्त नक्षत्र – सूर्य द्वारा शासित नक्षत्र – उत्तरफाल्गुणी, उत्तराषाढ़, कृतिका

26)प्रत्यारी नक्षत्र - मंगल ग्रह द्वारा शासित नक्षत्र- चित्रा, धनिष्ठा, मृगशिरा

27)बाधा नक्षत्र - बृहस्पति द्वारा शासित नक्षत्र - विशाखा,पुर्वभद्रापद, पुनर्वसु

28) मित्र नक्षत्र - शनि और बुध द्वारा शासित नक्षत्र - अनुराधा, ज्येष्ठा,उत्तरभद्रापद, रेवती, पुष्य, अश्लेषा

29)वर्ण - मा, मी, मु, मे

30) लकी कलर - क्रीम कलर

31) शारीरिक बनावट - लघु कद, केशयुक्त शरीर, रक्त वर्ण की आंखें, अच्छा व्यक्तित्व, सुंदर पर्सानालिटी

32)स्वाभव- प्रतीक शाही सिंहासन है और सूर्य राशी स्वामी है जो दर्शाता है कि जातक राजा की तरह व्यवहार करते है जैसे उनमे उत्तम नेतृत्व क्षमता होती है। वे दूसरो की केयर करते है,स्वयं सक्रिय होते है, सामाजिक रूप से सक्रिय, आक्रामक प्रकृति सभी मामले में, दूसरे के लिए उपयोगी, आत्म स्वतंत्रता प्रेमी,क्रूर लेकिन भीतरी दिल में नरम, दृढ़ता से नापसंद करने की आदत, ईर्ष्यालु,

अहंकारी,स्वाभिमानी,आत्मविश्वासी, समस्या को जल्दी हल करन काे गुण,भौतिकवादी जल्दी गुस्साने वाले होते है।

केतु देव द्वारा शासित है और पितृ देवता है अतः अपने प्राचीन परंपरा के प्रेमी, पुरातन मान्यता को मानने वाले, आध्यात्मिक, धार्मिक, बुजुर्गों के सम्मान करने वाले, संस्कारी होते है।

33) पेशा - प्रशासनिक प्रमुख, अभिनेता, प्रबंधक, वकीलों, इतिहासकार, नेता, राजनेता, बिग बहुराष्ट्रीय कंपनी मे नौकरिया, जज आदि

पुर्वफाल्गुणी नक्षत्र

1) 11 वीं नक्षत्र

2) अंग्रेजी नाम- गामा Leonis

3) नक्षत्र स्थिती - 13डिग्री 20मिनट से 26डिग्री 40 मिनट सिंह राशी मे

4)राशी स्वामी - सूर्य

5)विशोंतरी दशा स्वामी - शुक्र

6)देवता - भागा (विवाह और धन के देवता साथ ही भाग्य देवता भी माने जाते है)

7) प्रतीक - तैरता हुया बिस्तर/झूला

8)वर्ण - ब्राह्मण लेकिन कुण्डली मिलान में यह क्षत्रिय विचार किया जाता है।

9)वश्य - चतुष्पद(वनचर)

10)योनि - मूृषक

11)योनि वैर - मार्जर

12)गण - मानव

13)नाड़ी-मध्य

14) गतिविधि- संतुलित

15)प्रकृति- स्थिती

16) स्वभाव- उग्र

17)दिशा - ऊपर की ओर दिशा

18)लिंग - स्त्री लिंग

19) दोष - पित्त

20) गुण - राजसिक (रजोगुण)

21) तत्व - जलीय

22)रंग - लाइट भूरा

23)वर्ण - मो, टा, टी, टू

24)सबसे विनाशकारी नक्षत्र - आद्रा नक्षत्र

25)विपत्त नक्षत्र - चंद्रमा द्वारा शासित नक्षत्र - हस्ता, श्रवणा, रोहणी नक्षत्र

26)प्रत्यारी नक्षत्र -राहु द्वारा शासित नक्षत्र - स्वाति, शतभिषा, आद्रा

27)बाधा नक्षत्र - शनि द्वारा शासित नक्षत्र - अनुराधा ,उत्तरभद्रापद, पुष्य

28) मित्र नक्षत्र - बुध और केतु द्वारा शासित नक्षत्र - ज्येष्ठा, मूला, रेवती,अश्विनी,अश्लेषा, माघा

29)सबसे सहज नक्षत्र - माघा

30)सबसे असहज नक्षत्र - पुनर्वसु,अश्लेषा

31) शारीरिक बनावट- मध्यम कद , गोल चेहरा, आकर्षक बनावट

32) व्यवहार - इसका प्रतीक बिस्तर है और शुक्र ग्रह द्वारा शासित नक्षत्र है जो विपरीत लिंग के प्रति आकर्षण, प्रेम, आनंद, साफ-सफाई, आकर्षक बोली जाे विपरीत लिंग को आकर्षित करती है, विनम्र

सूर्य राशि स्वामी है जो दर्शाते है कि वे आकर्षक, स्वतंत्रता प्रेमी, प्रसिद्धि प्रेमी, लघु गुस्सा या आवेगी,अहंकारी, चैरिटेबल, सहायक, ईमानदार महत्वाकांक्षी, खुले दिमाग के हैं।

भागा देवता के कारण वे किस्मत वाले, रहस्यमय प्राकृतिक शक्ति वाले हैं, दूसरों के लिए भाग्यशाली होते है।

इसके अलावा वे आम तौर पर रेस्टलैस होते हैं।

33) पेशा - सेक्स से संबंधित कार्य, विवाह/शादी के प्लानर, अवैध काम, मनोवैज्ञानिक काम, शोधकर्ता, प्रशासन, होटल, मॉडल, अभिनय, गीत-संगीत,सैल्स, ऑटोमोबाइल आदि। समान्यतः वे शुक्र और सूर्य के अंतर्गत आने वाले सभी कामों में सफल रहते हैं।

उत्तरफाल्गुणी नक्षत्र

1) 12वीं नक्षत्र

2) अंग्रेजी नाम- बीटा Leones

3)नक्षत्र स्थिती - 26 डिग्री 40 मिनट सिंह राशी से 10 डिग्री कन्या राशी तक

4) राशि स्वामी - प्रथम पद का राशी स्वामी सूर्य है और अंतिम 3पद के स्वामी बुध है।

5)विशोंतरी दशा स्वामी - सूर्य

6)देवता - आर्यमन (आदित्यों में से एक)

7) प्रतीक - बिस्तर

8) वर्ण - क्षत्रिय लेकिन कुण्डली मिलान मे प्रथम पद क्षत्रिय और अंतिम 3पद वैश्य विचार किया जाता है।

9)वश्य -प्रथम पद चतुष्पद और अंतिम तीन पद मानव

10)गण - मानव

12) गुण - राजसिक (रजोगुण)

13) योनि- गाय

14) योनि वैर - व्याध्र

15) तत्व - अग्नि

16) गतिविधि - संतुलित

17)नाड़ी- आदि

18) दोष - वात्त

19) प्रकृति - संहारक

20) प्रकृति- ध्रुव

21) दिशा- नीचे की ओर

22) लिंग- स्त्री लिंग

23)वर्ण – टे, टो, पा, पी

24) शुभ रंग- ब्राइट ब्लू

25)सबसे विनाशकारी नक्षत्र - पुनर्वसु

26)विपत्त नक्षत्र - मंगल ग्रह द्वारा शासित नक्षत्र - चित्रा,धनिष्ठा,मृगशिरा

27)प्रत्यारी नक्षत्र - बृहस्पति द्वारा शासित नक्षत्र- विशाखा,पुर्वभद्रापद, पुनर्वसु

28)बाधा नक्षत्र- बुध द्वारा शासित नक्षत्र- ज्येष्ठा, रेवती, अश्लेषा

29) मित्र नक्षत्र – केतु और शुक्र द्वारा शासित नक्षत्र -मूला, अश्विनी, माघा, भरणी, पूर्व फाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा

30)सहज नक्षत्र - उत्तराभाद्रपद

31)असहज नक्षत्र -चित्रा, विशाखा

32) शारीरिक बनावट- मध्यम कद, कोमल शरीर, थुलथुल और आकर्षक

33)स्वाभव - समान्यतः पुर्वफाल्गुणी के समान । चैरिटेबल लेकिन केवल जरुरतमंद को, ईमानदार, धार्मिक, अत्यधिक परखने वाले, सहायक, दया,अपने ज्ञान से सत्य को खोजने वाले, झगड़ाें से दूर रहने वाले, सम्मान करने वाले, शांतिपूर्ण, समान्यतः विवादो को सहमती से निपटाने वाले,लेकिन शार्ट टेंमपर, अहंकारी, आरामपसंद, विलाशिता प्रेमी, भौतिकवादी इच्छाओं की तरफ मेहनती मानसिक रूप सेक्सुल, मेहनती

34) पेशा - वैज्ञानिक अनुसंधान, खगोल विज्ञान, ज्योतिष, सैन्य संबंधित नौकरियों, सशस्त्र बल, सामाजिक कार्यकर्ता, मीडिया, अभिनय, लेखन, बिक्री, व्यापार, वित्तीया।

हस्ता नक्षत्र

1) 13वीं नक्षत्र

2) अंग्रेजी नाम- गामा Corvi

3)नक्षत्र स्थिती- कन्या राशी मे 10 डिग्री से 23 डिग्री 20 मिनट तक

4) राशि स्वामी- बुध

5)विशोंतरी दशा स्वामी- चंद्रमा

6) देवता- सावित्री देवी (या भगवान सूर्य)

7) प्रतीक- हस्त

8) वर्ण- वैश्य

9) वश्य - द्विपद(मानव)

10) गण-देव

11) गुण - राजसिक (रजोगुण)

12) योनि- महिषी

13)योनि वैर - अश्व

14) नाड़ी- आदि

15) दोष- वात्त दोष

16) गतिविधि - धैर्य

17)प्रकृति - सृष्टि

18)स्वाभव -क्षिप्र (मृदु)

19) दिशा- किनारे से

20) तत्व - अग्नि तत्व

21) भाग्यशाली रंग- गहरा हरा रंग

22)वर्ण – पू, ष, ण,ठ

23)सबसे विनाशकारी नक्षत्र - पुष्य

24) सबसे सहज नक्षत्र - स्वाति

25) सबसे असहज नक्षत्र - अश्विनी

26) विपत्त नक्षत्र - राहु द्वारा शासित नक्षत्र- स्वाति, शतभिषा, आद्रा

27) प्रत्यारी नक्षत्र - शनि शासित नक्षत्र - अनुराधा,उत्तरभद्रापद, पुष्य

28)बाधा नक्षत्र - केतु द्वारा शासित नक्षत्र - मूला, अश्विनी, माघा

29) मित्र नक्षत्र - शुक्र और सूर्य द्वारा शासित नक्षत्र - भरणी, पुर्वफाल्गुणी, पूर्वाषाढ़ा,कृतिका, उत्तरफाल्गुणी, उत्तराषाढ़ा

30) शारीरिक बनावट - सुंदर, आकर्षक, मजबूत शारीरिक गठन

31) व्यवहार - हस्ता नक्षत्र सभी तीन राजकीय ग्रहों (सूर्य, चंद्रमा, बुध) की शक्ति प्राप्त करता है अतः वे लोगों को नियंत्रित करने की शक्ति रखते है, लोगों को प्रेरित करने की क्षमता रखते है,लोगों को मोटिभेट करने की क्षमता रखते है । इसके अलावा वे वफादार, सहायक, दयालु होते है पर कभी कभार वै दूसरो को सज़ा देने समय क्रूर भी होते है।

चंद्रमा भावावेश का संकेत देता है, बुध आकर्षक और सौंदर्य का संकेत देता है।सूर्य और बुध के कारण वे बहुत अच्छे जानकार, अच्छी क्षमता, कुशाग्रता, और आत्मनियंत्रण की शक्ति प्राप्त करते है।

प्रतीक हस्त है जो दर्शाता है कि वे कड़ी मेहनत करने वाले होते है।इसके अलावा हाथों में कला-कौशल, हाथों मे जादु या करिश्मा होेता है।

इसके अलावा वे आध्यात्मिक,तुरंत गुस्सा (लेकिने स्वयं पर नियंत्रण करने की क्षमता होती है।)

32) पेशा - प्रतीक हाथ है - वे बढ़ई, शिल्पकार, आदि जहाँ के हाथ की कला की जरूरत होतीहै, साथ ही यांत्रिक काम में जिसमे हाथों की कौशल की जरुरत हो, हस्तकला, जादूगर, हाथों की सफाई वाले चोर, तकनीकी कौशल वाले कार्य।

बुध राशी स्वामी है अतः उद्यमी, व्यापार, परामर्श, आदि।

चंद्रमा के कारण - ध्यान, हीलिंग, आध्यात्मिक गतिविधि आदि

सूर्य देवता के कारण पावर यानि प्रशासनिक पोस्ट, पावरफुल पोस्ट आदि

इसके अलावा वे विवाद को सलटाने मे निपुण होते है अतः वे मध्यस्थ या इस प्रकार की नौकरियों कर सकते है।

चित्रा नक्षत्र

1) 14 वीं नक्षत्र

2) अंग्रेजी नाम-स्पाइका

3)नक्षत्र स्थिति - 23 डिग्री 20 मिनट कन्या राशी से 6 डिग्री मिनट तुला राशी मे

4) राशि स्वामी -प्रथम 2पद के स्वामी बुध है और अंतिम 2पद के स्वामी शुक्र है।

5) विशोंतरी दशा स्वामी - मंगल

6) देवता - विश्वकर्मा

7) प्रतीक - चमकीले गहने

8) वर्ण- दास लेकिन कुण्डली मिलान मे प्रथम 2पद वैश्य और अंतिम 2पद शूद्र के रूप में विचार किया जाता है।

9)वश्य - द्विपद (मानव)

10) गण- दानव

11) गुण- तामसिक (तमो)

12) योनि- व्याध्र

13) योनि वैर - गाय (गौ)

14) नाडी- मध्य

15) दोष- पित्त

16) तत्व - अग्नि

17) गतिविधि- सक्रिय

18) प्रकृति- स्थिती

19) प्रकृति- मृदु

20) दिशा- बग़ल से

21) लिंग- स्त्री लिंग

22) भाग्यशाली रंग- काला

23) वर्ण – पे,पो,रा,री

24)सबसे विनाशकारी नक्षत्र - अश्लेषा

25)सबसे सहज नक्षत्र - विशाखा

26)सबसे असहज नक्षत्र - उत्तरफाल्गुणी, उत्तरभद्रापद

27)विपत्त नक्षत्र - बृहस्पति द्वारा शासित नक्षत्र - विशाखा, पूर्वभाद्रपद, पुनर्वसु

28) प्रत्यारी नक्षत्र- बुध द्वारा शासित नक्षत्र -ज्येष्ठा, रेवती, अश्लेषा

29)बाधा नक्षत्र - शुक्र द्वारा शासित नक्षत्र - पूर्वाषाढ़ा, भरणी, पूर्वफाल्गुनी

30) मित्र नक्षत्र - चंद्रमा और सूर्य द्वारा शासित नक्षत्र- उत्तरफाल्गुणी, उत्तराषाढ़, श्रवणा, हस्ता, रोहणी, कृतिका

31) शारीरिक बनावट - वे ग्लैमरस, सुंदर और मनभावन दिखते है।

32) व्यवहार - मंगल विशोंत्तरी स्वामी है और बुध तथा शुक्र राशि स्वामी है और विश्वकर्मा देवता है अतः वे खूबसूरती के साथ निर्माण क्षमता और बुद्धिमान तरीके से प्रस्तुतीकरण की गुण रखते है।बुद्धिमान,गहरा ज्ञान,कार्य को तत्पर, जल्दी से चुनौती देनेे की प्रकृति में होतीहै।इसके अलावा वे ग्लैमरस,विलासिता प्रेमी, स्वार्थि दिखाने वाले (लेकिन वास्तव में भीतरी दिल से स्वार्थि नहीं होते हैं)।वे दूसरो को सच्ची सलाह देने वाले, व्यापार कौशल मे निपुण, न्यायिक कौशल मे भी निपुण होते है। वे कुछ समय के लिए उग्र स्वभाव, भ्रष्ट, अत्यंत भावनात्मक प्रेमी, दूसरो पर दबाब डालने वाले हो सकते है। आध्यात्मिकता उनके व्यवहार का एक अन्य गुण है।

33) पेशा - अभिनय, मॉडल, सिनेमा उद्योग,रंगमंच, फोटोग्राफी, लेखन, चित्रकला, संगीतकार, डिजाइनर वस्तु , सभी प्रकार के डिजाइनर गहने, इंटीरियर डिजाइनर, कक्ष सज्जाकार, मैकेनिकल

डिजाइन, और अन्य कार्य जिसमे हमें डिजाइन कौशल कला की जरूरत हो। परियोजना प्रबंधक,जज, टीवी एंकर,इंजिनियर, कारपोरेट प्रबंधक, पुजारी, बागवानी, सौंदर्य उद्योग, आदि।

स्वाति नक्षत्र

1) 15 वां नक्षत्र

2) अंग्रेजी नाम- आर्कटुरस (अल्फा Bootie)

3)नक्षत्र स्थिति - तुला राशी मे 6डिग्री 40 मिनट से 20 डिग्री तक

4) राशि स्वामी - शुक्र

5)विशोंतरी दशा स्वामी - राहु

6) देवता - वायु देव

7)प्रतीक - वायु के झोंके के प्रभाव मे नव अंकुरित पौधा

8)वर्ण - कसाई लेकिन कुण्डली मिलान में शूद्र

9)वश्य - द्विपद (मानव)

10) गण- देव

11) नाडी- अंत्य

12) योनि- महिषी

13) योनि वैर - अश्व

14) गतिविधि- धैर्य

15) प्रकृति- चर

16)प्रकृति - संहारक

17) दिशा - बग़ल से

18) लिंग - स्त्री लिंग

19) दोष - कफ

20) गुण -तामसिक(तमो)

21)तत्व - अग्नि

22)वर्ण - रु, रे, रो, ता

23) शुभ रंग- काला

24) स्वाति पवित्रता का भी संकेत देता है।

25) विपत्त नक्षत्र - शनि द्वारा शासित नक्षत्र -अनुराधा,उत्तरभद्रापद, पुष्य

26)प्रत्यारी नक्षत्र - केतु द्वारा शासित नक्षत्र- मूला, अश्विनी, माघा

27)बाधा नक्षत्र - सूर्य द्वारा शासित नक्षत्र - कृतिका, उत्तराषाढ़, उत्तरफाल्गुणी

28) मित्र नक्षत्र - चंद्रमा और मंगल ग्रह द्वारा शासित नक्षत्र - श्रवणा, धनिष्ठा, रोहणी, मृगशिरा, हस्ता, चित्रा

29)सबसे सहज नक्षत्र - हस्ता

30)सबसे असहज नक्षत्र - अश्विनी, शतभिषा

31)व्यवहार - स्वाति नक्षत्र के देवता वायु देव (पवन देव) है इसलिए वे गतिशील प्रवृति के, स्वतंत्रताप्रेमी के, आसानी से संवाद करने वाले (वास्तव में वे संवाद कुशल मे होते है।), अनिश्चित स्वभाव के होते है।

राहु देव के और वायु की शक्ति के साथ वे आत्मविश्वासी, कोई भी काम करने की क्षमता, अच्छी कल्पना शक्ति और कल्पना को वास्तविकता की धरातल पर उतारने की क्षमता, अंतर्ज्ञान की क्षमता, बेशर्म, अपनी स्वतंत्रता को बनाये रखने मे कठोर होते है।

शुक्र राशी स्वामी है अतः मुलायम स्वभाव, सहायक, मिलनसार, प्यारे होते है।

इसके अलावा वे भावुक, धार्मिक,अच्छा शिक्षार्थी, जानकार,खुद के काम के लिए कुछ समय स्वार्थी, धैर्यवान होते है।इसके अलावा वे दिल से साफ, नई रचनात्मक विचार की क्षमता होती है।लेकिन इस विचार को आम तौर पर लोगों मूर्खता लगता है लेकिन उनमें इस मूर्खतापूर्ण विचार को सही(बड़ी उपलब्धि) साबित करने की क्षमता होती है।

32)पेशा - ज्योतिष (वे अंतर्ज्ञान की महान शक्ति और अंतर्दृष्टि के कारण), बिजनेस, सैल्स, शेयर बाजार, ड्रग्स, शराब, वित्त, कानूनी,सोना चाँदी से संबंधित व्यापार, यात्रा, मैकेनिकल इंजीनियर, अभिनय, वस्त्र, पुजारी इत्यादि ।

विशाखा नक्षत्र

1) 16 वीं नक्षत्र

2) अंग्रेजी नाम- अल्फा Libre

3)नक्षत्र स्थिति - 20डिग्री तुला राशी से 3 डिग्री 20 मिनट वृश्चिक राशी मे ।

4) राशि स्वामी - पहले 3पद के स्वामी शुक्र और अंतिम पद के स्वामी मंगल ग्रह है।

5) विशोंतरी दशा स्वामी - बृहस्पति

6)देवता - इन्द्राणि/ सतरागिणी

7) प्रतीक - एक विशाल वृक्ष फैली हुई शाखाओं के साथ

8) वर्ण - मल्लेचछ लेकिन कुण्डली मिलान मे प्रथम 3पद मिलान शूद्र और अंतिम पद ब्राह्मण के रूप में विचार किया जाता है।

9)वश्य - प्रथम 3 पद मानव (द्विपद) और अंतिम चतुर्थ पद कीट है।

10)गण - दानव

11)योनि - व्याघ्र

12)योनि वैर- गाय (गौ)

13)नाड़ी- अंत्य

14)गुण– सात्विक (सत्वगुण)

15) गतिविधि - सक्रिय

16)प्रकृति- सृष्टि

17) नेचर - मिश्रित (तीक्ष्ण और मृदु)

18) लिंग - स्त्री लिंग

19) दिशा - नीचे की ओर

20) दोष - कफ

21) तत्व - अग्नि

22)शुभ रंग- सुनहला

23)वर्ण - ती, तू, ते, तो

24)सबसे वैनाशिक नक्षत्र - पूर्वफाल्गुनी

25) सबसे सहज नक्षत्र- चित्रा

26) सबसे असहज नक्षत्र - उत्तरफाल्गुणी, उत्तरभद्रापद

27)विपत्त नक्षत्र - बुध द्वारा शासित नक्षत्र - ज्येष्ठा, रेवती, अश्लेषा

28)प्रत्यारी नक्षत्र - शुक्र द्वारा शासित नक्षत्र - पूर्वाषाढ़ा, भरणी, पूर्वफाल्गुनी

29)बाधा नक्षत्र - चंद्रमा द्वारा शासित नक्षत्र - श्रवणा, रोहणी, हस्ता

30) मित्र नक्षत्र - मंगल और राहु द्वारा शासित नक्षत्र - धनिष्ठा, शतभिषा, मृगशिरा, आद्रा, चित्रा, स्वाति

31) व्यवहार - विशाखा इन्द्राणी देवी द्वारा शासित नक्षत्र है जो शक्ति/ पद/ प्राधिकरण / अग्नि का प्रतिक है अतः विशाखा जातक पूर्ण ऊर्जावान, साहस से परिपूर्ण, दिखने से पहले अपनी उपस्थिति का आभास कराने वाले, गतिशील, सामान्य बात को जटिल बनाने वाले, समस्या पैदा करने वाले,विभाजनकारीहोते है।

बृहस्पति और अग्नि के प्रभाव के कारण वे धार्मिक, सत्यवादिता,अच्छे शिक्षार्थी, नई बातों के अनुसंधानक , बुद्धिमान, अपने सिद्धांतवादी, आधुनिक सोच वाले होते है।

शुक्र और मंगल राशी स्वामी है अतः वे संवाद कुशल, सुवक्ता, कभी - कभी बातूनी, शराब प्रेमी/नशेड़ी लत (यह नकारात्मक प्रभाव सभी मे हो जरुरी नहीं है)झगड़ालु, ईर्ष्यालु, आलोचनात्मक प्रकृति के, अपने लक्ष्यों के बारे में चिंता करना, अत्यधिक निश्चयी होते है।

32) पेशा - राजनीति, उच्च अधिकार वाले नौकरियां, उच्चतर जिम्मेदारी वाले कार्य,लीडरशिप, गणितज्ञ, नेता, सैन्य लीडरशिप,अध्यापन, किसी भी काम जिसमे उच्च ऊर्जावान क्षमता की व्यक्ति की जरूरत है, स्वव्यवसाय, अनुसंधान, वैज्ञानिक, आदि

अनुराधा नक्षत्र

1) 17 वीं नक्षत्र

2) अंग्रेजी नाम- गामा Scorpii

3)नक्षत्र स्थिति- 3डिग्री 20मिनट से 16डिग्री 40मिनट तक वृश्चिक राशी तक मे

4) राशि स्वामी - मंगल ग्रह

5) विशोंतरी दशा स्वामी - शनि

6) देवता - मित्रा

7) प्रतीक - कमल के फूल/ फूलपत्ती सै सजा विजयी द्वार

8)वर्ण - शूद्र लेकिन कुण्डली मिलान में यह ब्राह्मण के रूप में विचार किया जाता है।

9)वश्य - कीट

10) गण - देव

11) योनि - हिरण (मृग)

12) योनि वैर - श्वान

13) नाड़ी- मध्य

14) दोष- पित्त

15) गतिविधियों - धैर्यवान

16) प्रकृति - स्थिती

17)नेचर -मृदु(मुलायम)

18)लिंग - पुरुष लिंग

19)तत्व - अग्नि

20) दिशा - बग़ल से

21) गुण -तामसिक (तमो)

22)शुभ रंग - लाल भूरे रंग

23)वर्ण - ना, नी, नू, ने

24)सबसे विनाशकारी नक्षत्र - उत्तरफाल्गुणी

25) सबसे सहज नक्षत्र - ज्येष्ठा

26) सबसे असहज नक्षत्र - आद्रा, मूला

27) विपत्त नक्षत्र - केतु द्वारा शासित नक्षत्र - मूला, अश्विनी, माघा

28)प्रत्यारी नक्षत्र - सूर्य द्वारा शासित नक्षत्र - उत्तराषाढ़, कृतिका, उत्तरफाल्गुणी

29)बाधा नक्षत्र - मंगल ग्रह द्वारा शासित नक्षत्र - धनिष्ठा,मृगशिरा, चित्रा

30) मित्र नक्षत्र - राहु और बृहस्पति द्वारा शासित नक्षत्र - शतभिषा ,पूर्वभाद्रपद, आद्रा, पुनर्वसु, स्वाति, विशाखा

31) व्यवहार - अनुराधा धार्मिक और आध्यात्मिक झुकाव का इशारा करता है।वे इस झुकाव द्वारा स्वयं का विकास करते है।

अनुराधा जलीय राशी मे अवस्थित है, वो स्वयं अग्नि तत्व वाले है अतः व भावुक, शार्ट टेम्पर वाले,बाहरी स्वरुप से गोपनीय,ईर्ष्यालु,चिड़चिड़ा, हमेशा अनदेखी बातों के लिए चिंतित , गोपनीयता प्रेमी और स्वयं की गोपनीयता के बारे में चिंतित रहने वाले, विपरीत सेक्स के प्रति आकर्षित होते है।

राशि स्वामी मंगल ग्रह है और विशोंतरी दशा स्वामी शनि है अतः वे स्पष्ट विचार और तर्क वालें, बहादुर, ज्ञानी, समझदार, अपने दुश्मन को नष्ट करने वाले, नेतृत्व क्षमता, प्राचीन ज्ञान में रुचि, असंतोषी होते हैं।

मित्रा अनुराधा का देवता है अतः वे दोस्त बनाने मे कुशल, सामाजिक, माननीय, प्रसन्नता, सद्भावना वाले होते है।

32)पेशा- गणित, विज्ञान, इंजीनियर, ज्योतिष, यात्रा सलाहकार, पर्यटन, यात्रा, खनन, प्रशासनिक नौकरियों, नेता इत्यादि ।

ज्येष्ठा नक्षत्र

1) 18 वीं नक्षत्र

2) अंग्रेजी नाम- अल्फा Scorpii/Antares

3)नक्षत्र स्थिती - 16 डिग्री 40 मिनट वृश्चिक राशी से 30 डिग्री वृश्चिक राशी तक

4) राशि स्वामी - मंगल ग्रह

5) विशोंतरी दशा स्वामी - बुध

6) देवता - इंद्र

7) प्रतीक - चक्राकार सुरक्षा तिलस्म

8)वर्ण - दास लेकिन कुण्डली मिलान में ब्राह्मण

9)वश्य - कीट

10)गण - दानव

11) योनि - मृग

12)योनि वैर - श्वान

13) नाड़ी - आदि

14) गतिविधि- सक्रिय

15) प्रकृति - संहारक

16) प्रकृति - तीक्ष्ण

17) दिशा - बग़ल की ओर

18) लिंग - स्त्री लिंग

19) दोष - वात्त

20) भाग्यशाली रंग - क्रीम कलर

21) वर्ण - नो, या, यि, यू

22) गुण - सात्विक

23) तत्व - वायु

24) सबसे विनाशकारी नक्षत्र - हस्ता

25) सबसे सहज नक्षत्र - अनुराधा

26) सबसे असहज नक्षत्र -आद्रा, मूला

27) विपत्त नक्षत्र - शुक्र द्वारा शासित नक्षत्र - पूर्वाषाढ़ा, भरणी, पूर्वफाल्गुनी

28)प्रत्यारी नक्षत्र - चंद्रमा द्वारा शासित नक्षत्र - श्रवणा, रोहणी, हस्ता

29)बाधा नक्षत्र - राहु द्वारा शासित नक्षत्र - शतभिषा, आद्रा, स्वाति

30) मित्र नक्षत्र - बृहस्पति और शनि द्वारा शासित नक्षत्र - पूर्वभाद्रपद, उत्तरभद्रापद, पुनर्वसु, पुष्य, विशाखा, अनुराधा

31) व्यवहार - इंद्र देवता है, वे अहंकारी, सम्मानित, स्वयं के सत्ता को लेकर चिंतित, स्वयं के कार्य मे अनैतिकत, परिवार पर नियंत्रण करने की क्षमता और परिवार की जिम्मेदारी लनेे वाले ,खुद की सहायता के लिए सर्किल बनाने मे सक्षम होते है।

बुध और मंगल ग्रह के प्रभाव के कारण वे विश्लेषणात्मक क्षमता वाले, रचनात्मक प्रतिभा वाले , गुस्सैल, उच्च महत्वाकांक्षी, मेहनती, अपनी सोच को करवाई मे बदलने वाले होते है।

इस के अलावा वे आम तौर पर वहाँ भावनात्मक रुप से भावुक, संवेदनशील, अच्छे हृदय वाले, तिलस्म प्रेमी, रहस्य प्रेमी, मूडी, गोपनीयता निर्माता, रहस्य को छुपाने अद्भुत क्षमता होती है।

32) पेशा - स्वरोजगार, प्रबंधन, अभिनय, नाटक, संगीत, लेखकों, मॉडलिंग, नेता, सैन्य लीडर, जासूसी सेवाओं, ज्योतिष, मानसिकता से जुड़ी कार्य, दार्शनिक, इंजीनियर ,इत्या

मूल नक्षत्र

1) 19वॉ नक्षत्र

2) अंग्रेजी नाम- Lemda Scorpii

3)नक्षत्र स्थिती – 0 डिग्री धनु राशी से 13 डिग्री 20 मिनट धनु राशी तक

4) राशि स्वामी – बृहस्पति

5)विशोंतरी दशा स्वामी – केतु

6)देवता – देवी निरिती/अलक्ष्मी या देवी महाकाली

7)प्रतीक – जड़ों का गुच्छा जो एक साथ गुथें हुए हो

8)वर्ण – कसाई लेकिन कुण्डली मिलान में क्षत्रिय

9)वश्य – द्विपद (मानव)

10)गण – दानव

11) योनि- श्वान

12)योनि वैर – मृग

13) नाड़ी-आदि

14) गतिविधि- सक्रिय

15)प्रकृति- सृष्टि

16) प्रकृति- तीक्ष्ण

17) गुण -तामसिक (तमो)

18) दिशा – नीचे की ओर

19) लिंग – नपुंसक

20) दोष- वात्त

21) तत्व – वायु

22)वर्ण – ये, यो, भा,भी

23)शुभ कलर- भूरेपन लिए हुए पीला रंग

24)सबसे विनाशकारी नक्षत्र – चित्रा

25) सबसे सहज नक्षत्र – आद्रा

26)सबसे असहज नक्षत्र – अनुराधा, ज्येष्ठा

27) विपत्त नक्षत्र – सूर्य द्वारा शासित नक्षत्र – उत्तराषाढ़, कृतिका, उत्तरफाल्गुणी

28)प्रत्यारी नक्षत्र – मंगल ग्रह द्वारा शासित नक्षत्र – धनिष्ठा,मृगशिरा, चित्रा

29) बाधा नक्षत्र – गुरु द्वारा शासित नक्षत्र – पूर्वभाद्रपद, पुनर्वसु, विशाखा

30) मित्र नक्षत्र – शनि और बुध द्वारा शासित नक्षत्र – उत्तरभद्रापद, रेवती, पुष्य, अश्लेषा, अनुराधा, ज्येष्ठा

31)व्यवहार – नक्षत्र का प्रतीक जड़ या मूल है जो दर्शाते है कि वे किसी भी तथ्य के आखिरी जड़ या मूल को खोजने वाले होते है। वे छिपे हुए तथ्यों के बारे में चिंतनकर्ता या शोधकर्ता होते है। मूला जातक गुप्त तथ्यो के बारे मे चिंतित रहने वाले होते है।

राशी स्वामी बृहस्पति है और केतु द्वारा शासित नक्षत्र है अतः वे सच्चाई पसंद होते है (कुछ समय तो वे अतिसत्यवादी होते हैजिससे लोगों को ठेस पहुँचाने वाले हो सकते है)। वे धार्मिक, आध्यात्मिक और भौतिकवादिता दोनों ओर झुकाव वाले , दोहरी प्रकृति, प्रतिबद्धता के प्रति हठ, फिक्स्ड राय वाले और तत्पर होते है। वे खुद के काम के लिए दूसरो पर दबाब डालने वाले, महत्वाकांक्षी,घमंडी, मेहनती, बुद्धिमान, चतुर, राजनीतिक प्रकृति के हैं।वे मित्र निर्माण मे कुशल, भाषण मे उत्तम और नरम स्वभाव के होते है पर वाणी मे अति खऱखऱ होते है।वे विलासितापूर्ण जीवन जीने वाले और रिश्तो मे अस्थिरता या चंचलता वाले होते है।

32) पेशा – सलाहकार, स्वव्यवसाय/ स्वरोजगार, अनुसंधान, विज्ञान, धार्मिक काम, लेखक, आध्यात्मिक शिक्षक, वकील, राजनीति, डॉक्टरों, फार्मा, अन्वेषक। लेकिन वे प्रकृति में नौकरी/व्यवसाय परिवर्तक होते है।

33)मूला नक्षत्र हमारी आकाशगंगा मिल्कीवे का केंद्र है।

पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र

1) 20 वीं नक्षत्र

2) अंग्रेजी नाम – डेल्टा Sagittarii

3)नक्षत्र स्थिती-13डिग्री 20मिनट से 26 डिग्री 40 मिनट धनु राशी मे

4) राशि स्वामी – गुरु

5)विशोंतरी दशा – स्वामी- शुक्र

6) देवता- अफा देवी (जल की देवी)

7) प्रतीक – हस्त पंखा या हाथी दांत की आकृति

8) वर्ण- ब्राह्मण लेकिन कुण्डली में मिलान क्षत्रिय

9)वश्य – प्रथम पद द्विपद(मानव) है और पिछले 3पद चतुष्पद है

10) गण- मानव(मनुष्य)

11) योनि- वानर

12) योनि वैर – मेष

13) नाडी- मध्य

14) क्रियाएँ – संतुलित

15)प्रकृति- स्थिती

16) प्रकृति- उग्र

17) लिंग- स्त्री लिंग

18) दोष- पित्त

19) दिशा- नीचे की ओर

20) गुण – राजसिक (रजोगुण)

21) तत्व – वायु तत्व

22)वर्ण – भू, ध, फ, ढ़

23) इसको अपराजिता नक्षत्र रूप में जाना जाता है।

24) यह जलीय नक्षत्र के रूप में जाना जाता है।

25)सबसे विनाशकारी नक्षत्र – स्वाति

26) सबसे सहज नक्षत्र – श्रवणा

27) सबसे असहज नक्षत्र – कृतिका, पुष्य

28) विपत्त नक्षत्र – चंद्रमा द्वारा शासित नक्षत्र – श्रवणा,रोहणी, हस्ता

29)प्रत्यारी नक्षत्र – राहु द्वारा शासित नक्षत्र – आद्रा,शतभिषा, स्वाति

30)बाधा नक्षत्र – शनि शासित नक्षत्र -उत्तरभद्रापद, पुष्य, अनुराधा

31) मित्र नक्षत्र – बुध और केतु द्वारा शासित नक्षत्र – रेवती, अश्विनी, अश्लेषा, माघा, ज्येष्ठा,मूला

32) व्यवहार – अपराजिता इस नक्षत्र का दूसरा नाम यह दर्शाता है कि वे किसी भी मामले में विजेताओं के गुण वाले होते हैं और किसी भी स्थिति में हार स्वीकार नहीं करने के संकेत देतेहै। इसके अलावा समस्या को हल करने की क्षमता होती है (लेकिन समान्यतः वे इस क्षमता का उपयोग दूसरों के मामलाेंं मे हस्तक्षेप करने और अन्यो की समस्या को हल करने की कोशिश करने मे करते है।) वे अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए कड़ी मेहनत करने वाले होते है। साथ मे अपने लक्ष्य को हासिल करने हेतु वे लम्बे समय तक धैर्य रखने की क्षमता होती है क्योकिं उनमे हारने की आदत नहीं होती है।

अफा देवी के कारण वे जलीय प्रकृति के गुण का समावेस होता है अतः वे छिपे हुए ,गुप्त, रहस्यमय, भावुक रुप से आक्रामक और बेचैंन व्यवहार वाले होते है।

बृहस्पति राशि स्वामी है और शुक्र दशा स्वामी है अतः वे दयालु प्रकृति, मदद करने वाले, अपनी क्षमता को साबित करने को तर्क मे निपुण और आकर्षित व्यक्तित्व वाले,सत्यवक्ता,समाज में प्रसिद्ध ,पाखंड से नफरत करने वाले, अड़िग और दोस्ताना स्वभाव के होते है।

33)पेशा – दार्शनिक, लेखक, शिक्षक, विज्ञान, चिकित्सा, ललित कला, विवादकर्ताओं, वकील, पर्यटन उद्योग,राजनेता, शिंपिंग, नौकाविहार के रूप में पानी के साथ जुड़े पेशा।

उत्तराषाढ़ नक्षत्र

1) 21th नक्षत्र

2) अंग्रेजी नाम- σ (सिग्मा) Sagittarii

3)नक्षत्र स्थिति- 26 डिग्री 40मिनट धनु से 10 डिग्री मकर राशी मे

4) राशि स्वामी -प्रथम पद के राशि स्वामी बृहस्पति और अंतिम 3पद के राशि स्वामी शनि है।

5) विशोंतरी दशा स्वामी – सूर्य

6) देवता – दस विश्वदेवा(भगवान धर्म और देवी विश्वा का बेटा)

7) प्रतीक – हाथी दाँत

8) इस नक्षत्र को भगवान गणेश से भीे संबंधित माना जाता है।

9) वर्ण – क्षत्रिय लेकिन कुण्डली मिलान मे प्रथम पद क्षत्रिय है और अंतिम 3पद वैश्य विचार किया जाता है।

10)वश्य – चतुष्पद

11) गण- मानव

12) योनि- नकुल

13)योनि वैर – सर्प

14) नाडी- अंत्य

15) गतिविधि- संतुलित

16)प्रकृति – संहारक

17) प्रकृति- ध्रुव

18) गुण – राजसिक (रजोगुण)

19) दिशा – ऊपर की ओर

20) लिंग- स्त्री लिंग

22) दोष – कफ

23)तत्व – वायु तत्व

24) शुभ रंग – ताम्र वर्ण

25)वर्ण – भे, भो,जा, जी

26)सबसे विनाशकारी नक्षत्र – विशाखा

27) सबसे सहज नक्षत्र – उत्तराषाढ़

28)सबसे असहज नक्षत्र – रोहणी, मृगशिरा

29)विपत्त नक्षत्र – मंगल ग्रह द्वारा शासित नक्षत्र-धनिष्ठा, मृगशिरा, चित्रा

30)प्रत्यारी नक्षत्र – बृहस्पति द्वारा शासित नक्षत्र- पूर्वभाद्रपद, पुनर्वसु, विशाखा

31)बाधा नक्षत्र -बुध द्वारा शासित नक्षत्र – रेवती, अश्लेषा,ज्येष्ठा

32) मित्र नक्षत्र -केतु और शुक्र द्वारा शासित नक्षत्र – अश्विनी, भरणी, माघा, पूर्वफाल्गुनी,मूला, पूर्वाषाढ़ा

33) व्यवहार -दस विश्वदेवा नक्षत्र के देवता है अतः वे सभी बाधाओं को दूर करने मे सक्षम, सत्यवादी, प्रतिभाशाली, कुशल, क्षमा करने वाले, आकर्षक,दयालु होते है।

सूर्य दशा स्वामी है अतः वे (कुछ समय) आक्रामक, प्रशासनिक क्षमता,माडर्न, रॉयल, नेतृत्व क्षमता,ईमानदार होते है।

शनि और बृहस्पति राशी स्वामी है अतः वै आध्यात्मिक क्षमता वाले,लक्ष्य या उपलब्धि के लिए परिश्रमी, व्यावहारिक प्रकृति के होते है।

इसके अलावा वे आलसी लेकिन बुद्धिमान होते हैं, कार्य मे कुशल,कार्य मे पूर्णतः अपने आप को झोंकने वाले, अपने भावना को मृदु तरीके से व्यक्त करने की क्षमता होती है। वे सलाहकार प्रकृति के,पाखंड से नफरत करने

वाले,मृदुभाषी, शुद्ध हृदय वाले और सहायक होते है। वे (वायु प्रकृति के कारण) कई दोस्त होते है। वे अन्य द्वारा अपने कीये गये उपकार की वापसी पाते है और लोगो द्वारा पसंद कीये जाते है।

33) पेशे – वास्तुशिल्पकार, इंजीनियरिंग, उद्योग, मैकेनिकल नौकरियों, सेना, प्रशासन, राजनीति, आध्यात्मिक, हीलिंग।

श्रवणा नक्षत्र

1) 22th नक्षत्र

2) अंग्रेजी नाम-α (अल्फा) Aquile या Altair

3)नक्षत्र स्थिति-10 डिग्री मकर राशि से 23 डिग्री 20 मिनट मकर राशी मे

4) राशि स्वामी – शनि

5)विशोंत्तरी दशा स्वामी – चंद्रमा

6)देवता – भगवान विष्णु या देवी सरस्वती

7)प्रतीक – कान या गरुड़ का पंजा

8) वर्ण – मल्लेचछ लेकिन कुण्डली मिलान में वैश्य

9) वश्य – जलचर

10) योनि- वानर

11) योनि वैर – मेष

12) गण- देव

13) नाडी़- अंत्य

14) गुण – राजसिक (रजोगुण)

15) वर्ण – खी, खू,खे,खो

16) लकी कलर – लाइट ब्लू

17) गतिविधि- धैर्यवान

18)प्रकृति-सृष्टि

9) प्रकृति- चर

20) दिशा-ऊपर की ओर

21) लिंग- पुरुष लिंग

22) दोष-कफ दोष

23) तत्व – वायु तत्व

24)सबसे विनाशकारी नक्षत्र – अनुराधा

25) सबसे सहज – पूर्वाषाढ़ा

26) सबसे असहज नक्षत्र – कृतिका, पुष्य

27)विपत्त नक्षत्र – राहु द्वारा शासित नक्षत्र – शतभिषा , आद्रा, स्वाति

28) प्रत्यारी नक्षत्र – शनि द्वारा शासित नक्षत्र -उत्तरभद्रापद, पुष्य, अनुराधा

29)बाधा नक्षत्र – केतु द्वारा शासित नक्षत्र – अश्विनी, माघा, मूला

30) मित्र नक्षत्र – शुक्र और सूर्य द्वारा शासित नक्षत्र- भरणी, कृतिका ,पूर्वफाल्गुनी,उत्तरफाल्गुणी, पूर्वाषाढ़ा, उत्तराषाढ़

31)व्यवहार – श्रवणा का प्रतीक सुनने और सीखने की अच्छी गुणवत्ता का संकेत देता है, वे बातुनी स्वाभव के भी होते है। वे सुनी सूनाई बातो में विश्वास कर लेते है और इस नजरिए से कुछ समय गलतफहमी का भी शिकार हो सकते है।

इस नक्षत्र को देवी सरस्वती से शक्ति प्राप्त होती है जो संकेत देता है कि शिक्षा के क्षेत्र मे ज्ञान से संबंधित है, संगीत, नृत्य, अभिनय और अन्य विभिन्न कला के रूप में विशेषज्ञ हो सकते है। अच्छे सलाहकार और स्वयं के ज्ञान से मदद करने वाले और ज्ञान का अपार धन के माध्यम से मदद की प्रकृति होती है।

भगवान विष्णु नक्षत्र के देवता है जो जातक को बेहद धार्मिक, अपने काम के प्रति जिम्मेदार और ईमानदार , बुद्धिमान, और मामले को बुद्धिमानी तथा साफ सुथरे तरीके से निपटाने की गुणवत्ता देता है। साथ ही वे बड़े दिलवाले , दयालु, चतुर, शांति प्रेमी और आसपास के महौल मे शांति के लिए प्रयास करने वाले होते है।

चंद्रमा विशोंत्तरी दशा के स्वामी के रुप मे बोली चाली मे मीठा, काम मे साफ सुथरा, अत्यधिक भावुक, बहुत खुले दिमाग वाले, ईमानदार, अपने ज्ञान से लोगो को मदद करने वाले, मल्टी टास्किंग क्षमता, लोगो से जुड़ने की क्षमता वाले होते है।

शनि राशी स्वामी है अतः वे कठिन मेहनती, अपने कार्य के प्रति अत्यंत जिम्मेदार,अनुशासित (निश्चित सिद्धांत से जीवन जीने वाले और सख्ती से इसको पालन करने की कोशिश वाले), प्राचीन शास्त्र / पौराणिक ज्ञान प्रेमी, तर्क – वितर्क की प्रकृति, ईर्ष्यालु प्रकृति,अपने ज्ञान को लेकर स्वार्थी होते है।

इसके अलावा वे उच्चतम सीमा तक सच्चाई पसंद होते है और इस मामले मे वे कोई समझौता नहीं करते है।

33) पेशा – इंजीनियर, मेडिकल, विज्ञान, शिक्षा के किसी भी कला मे,शिक्षक, स्कूल, तेल और पेट्रोलियम से संबंधित कार्य, ज्योतिष, धार्मिक विद्वानों, राजनेता, भूविज्ञानी, समाचार प्रसारक, रिकॉर्डिंग, कहानी सुनाने वाले,किसी भी शिक्षा लाइन के अध्यक्ष के रूप में , वक्ता इत्यादि

धनिष्ठा नक्षत्र

1) 23वीं नक्षत्र

2) अंग्रेजी नाम – बीटा Delphini /Avittam

3)नक्षत्र स्थिती – 23 डिग्री 20 मिनट मकर राशी से 6 डिग्री 40 मिनट कुंभ राशी मे

4) राशि स्वामी – शनि

5) विशोंतरी दशा स्वामी – मंगल ग्रह

6)देवता – आठ वसु (अफा, ध्रुव, धरा, अनिला, अनला,प्रत्युषु,प्रवसु, सोम)

7) प्रतीक – मृदंगा/ ढ़ोलक / डमरु

8)वर्ण – दास, लेकिन कुण्डली मिलान में प्रथम 2पद वैश्य है और अंतिम 2पद शूद्र है।

9))वश्य – प्रथम 2पद जलचर है और अंतिम 2पद मानव या द्विपद है।

10) योनि – सिंह

11) योनि वैर – गज

12)गण – दानव

13) गुण – तामसिक (तमो)

14) नाडी- मध्य

15) दोष – पित्त

16) क्रियाएँ – सक्रिय

17) नेचर – चर

18)प्रकृति- स्थिती

19) लिंग- स्त्री लिंग

20) दिशा – ऊपर की ओर

21) तत्व – गगन/ आकाश)

22) वर्ण – गा, गी,सी, सू

23) लकी कलर – सिल्वर ग्रे

24) सबसे विनाशकारी नक्षत्र – ज्येष्ठा

25) सबसे असहज नक्षत्र- भरणी, रेवती

26) सबसे सहज नक्षत्र – पूर्वभाद्रपद

27)विपत्त नक्षत्र – बृहस्पति द्वारा शासित नक्षत्र – पूर्वभाद्रपद, पुनर्वसु, विशाखा

28) प्रत्यारी नक्षत्र – बुध द्वारा शासित नक्षत्र – रेवती, अश्लेषा, ज्येष्ठा

29)बाधा नक्षत्र – शुक्र द्वारा शासित नक्षत्र — भरणी, पूर्वफाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा

30) मित्र नक्षत्र – सूर्य और चंद्रमा द्वारा शासित नक्षत्र – रोहणी, कृतिका, उत्तरफाल्गुणी, उत्तराषाढ़, श्रवणा, हस्ता

31)धनिष्ठा नक्षत्र अपने प्रतीक डमरु के कारण भगवान शिव से संबंधित भी माना जाता है।

32) व्यवहार – इसका प्रतीक मृदंगा है जो संगीत, नृत्य और खुशी या आनंद की ओर झुकाव का संकेत देता है।

देवता आठ वसु है जो बहुत शुभ माने जाते है। वे गाने बजाने के धुन के प्रेमी, समृद्धि की चाहत वाले और व्यवाहारिक होते है।यह प्रसिद्धि, सफलता,धनवान,दयालु प्रवृति का संकेत देता है।

मंगल ग्रह दशा स्वामी संकेत देता है निडरता, आक्रामकता, फ्रेंकनेंस, युवाओं वाला जोश, समूह केंद्रित गतिविधि और युवा लुक का संकेत देता है।

राशी स्वामी शनि है अतः वे मेहनती प्रकृति,अड़ियल स्वाभव, उदार स्वाभव वाले,अनुशासित तरीके से काम करने वाले, आंतरिक परख वाले होते है।

इसके अलावा धनिष्ठा भौतिकवादी संसार और विलीसिता की ओर झुकाव का संकेत देता है। वे तार्किक और बातूनी होते हैं, सफलता और प्रसिद्धि के लिए आतुर, प्रकृति में उदार, आस पास के महौल के अनुरुप स्वयं को ढ़ालने वाले, लापरवाह ,आसपास के वातावरण को अपने आराम के मुताबित बनाने की क्षमता, समाजिक और दूसरो द्वारा स्वीकार्य की जाने वाले होते है।

33) पेशा – प्रबंधकीय पद, समूह गतिविधि, संगीतकार, कवि, सेना के बैंड, प्रार्थना कराने वाले, मेडिकल सर्जन/शल्य चिकित्सा, चिकित्सक, शोधकर्ता, वैज्ञानिक शोधकर्ता, रियल एस्टेट, खनन, धर्मार्थ संगठन, सेना, पुलिस, ज्योतिष आदि

शतभिषा नक्षत्र

1) 24 वें नक्षत्र

2)शतभिषा नक्षत्र को Chatyam / Sadayam / Veiling स्टार के रूप में भी जानते है।

3) अंग्रेजी नाम- Aquari

4)नक्षत्र स्थिती — 6 डिग्री 40 मिनट से 20 डिग्री कुंभ राशी मे

5) राशि स्वामी — शनि

6) विशोंतरी दशा स्वामी – राहु

7)देवता – वरुण देव

8) प्रतीक – एक खाली गोलाकार आकृति

9)वर्ण – कसाई लेकिन कुण्डली मिलान में शूद्र

10) वश्य – द्विपद(मानव)

11) योनि- अश्व

12) योनि वैर – महिषी

13)नाड़ी- आदि

14) गण – दानव

15) गतिविधि – सक्रिय

16) प्रकृति — संहारक

17)नेचर – चर (

18) गुण –तामसिक (तमो)

19) दिशा – ऊपर की तरफ से

20) लिंग – नपुंसक

21) दोष – वात्त

22)तत्व) – गगन / आकाश)

23) वर्ण – गो, सा, सी, सू

24) लकी रंग- नीलापन लीए हुए हरा रंग

25) सबसे विनाशकारी नक्षत्र – मूला

26) सबसे सहज नक्षत्र- अश्विनी

27) सबसे असहज नक्षत्र – हस्ता, स्वाति

28) विपत्त नक्षत्र – शनि द्वारा शासित नक्षत्र – उत्तरभद्रापद, पुष्य, अनुराधा

29)प्रत्यारी नक्षत्र – केतु द्वारा शासित नक्षत्र -अश्विनी, माघा,मूला

30) बाधा नक्षत्र – सूर्य द्वारा शासित नक्षत्र – कृतिका, उत्तरफाल्गुणी, उत्तराषाढ़

31) मित्र नक्षत्र – चंद्रमा और मंगल ग्रह द्वारा शासित नक्षत्र – रोहिणी, मृगशिरा, हस्ता, चित्रा, श्रवणा, धनिष्ठा

32) व्यवहार – शतभिषा आध्यात्मिकता,शारीरिक हीलिंग चिकित्सा, रहस्यवाद, माया, गुप्त दृष्टि इत्यादि से संबंधित है। वे चतुर, तार्किक, मूडी, कठोर वचन बोलने वाले (बिना किसी हिचकिचाहट के सच्चाई को बताने

वाले)होते है। वे अकेलापन पसंद करते हैं। निर्धारित मार्ग से, अनुशासित तरीके और कड़ी मेहनत से जितनी स्वयं की शक्ति हो कार्य करना पसंद करते है।वे अनुसंधान और वैज्ञानिक विधि द्वारा किसी बात का कारण पता करने वाले होते है। इसके अलावा वे दर्शन में इस शोध (मेरा मतलब दर्शन में वैज्ञानिक अनुसंधान) करते हैं। वे अवसाद से पीड़ित, आलसी और सामाजिक कौशल के अभाव(अशिष्टता रवैया के कारण) वाले होते है।उच्चतम स्तर के ज्ञान के बारे में बहुत झुकाव होता है।कोई भी काम करने के लिए उत्तम स्तर का आत्मविश्वास होता है।शतभिषा की मुख्य समस्या छिपी हुई प्रकृति वाले कार्य और गुप्त गतिविधि है जो दूसरो की नजर उन्हें संदिग्ध बनाती है।

33) पेशा – मेडिकल लाइन, डॉक्टर विभिन्न क्षेत्र मे (आयुर्वेद, होम्योपैथिक, सर्जन, आदि), चिकित्सा अनुसंधान कठिन बीमारी के या उच्च स्तर के , रसायन चिकित्सा, मनोविज्ञान, ज्योतिष, खगोल विज्ञान, विमान उद्योग, रॉकेट विज्ञान, राजनीति, चिकित्सा, व्यवसाय, काला जादू, तांत्रिक, केमिस्ट, शराब उद्योग, तस्करी, माफिया, बिजली, लेखक, परमाणु वैज्ञानिक।

पूर्वभाद्रपद नक्षत्र

1) 25 वीं नक्षत्र

2) अंग्रेजी नाम – अल्फा पेगासी

3)नक्षत्र स्थिति – 20 डिग्री कुंभ राशी से 3 डिग्री 20 मिनट मीन राशी तक

4) राशि स्वामी – प्रथम 3 पद शनि और अंतिम 4 पद बृहस्पति

5)विशोंतरी दशा स्वामी – बृहस्पति

6) देवता – अजएकपाद(भगवान रुद्र का एक रुप)

7)प्रतीक – दो विपरीत दिशाओं वाले मानव मुख

8) वर्ण – ब्राह्मण लेकिन में कुण्डली मिलान प्रथम 3पद शूद्र है और अंतिम पद ब्राह्मण है।

9)वश्य -प्रथम 3पद मानव (द्विपद) और अंतिम पद जलचर है।

10) गण- मानव (मनुष्य)

11) योनि- सिंह

12)योनि वैर – गज

13) नाड़ी-आदि

14) गतिविधि – धैर्य रखने वाला

15) प्रकृति- सृष्टि

16) प्रकृति – उग्र (भयंकर)

17) गुण – सात्विक

18) दिशा- नीचे की ओर

19) लिंग- पुरुष लिंग

20) दोष- वात्त

21)तत्व – आकाश/गगन

22)वर्ण – से, सो, दा ,दी

23) भाग्यशाली रंग- सिल्वर ग्रे

24) सबसे विनाशकारी नक्षत्र – पूर्वाषाढ़ा

25) सबसे सहज नक्षत्र – धनिष्ठा

26) सबसे असहज नक्षत्र – भरणी, रेवती

27) विपत्त नक्षत्र – बुध द्वारा शासित नक्षत्र – रेवती, अश्लेषा, ज्येष्ठा

28)प्रत्यारी नक्षत्र – शुक्र द्वारा शासित नक्षत्र – भरणी, पूर्वफाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा

29)बाधा नक्षत्र – चंद्रमा द्वारा शासित नक्षत्र – रोहणी, हस्ता, श्रवणा

30) मित्र नक्षत्र – मंगल और राहु द्वारा शासित नक्षत्र- मृगशिरा, आद्रा, चित्रा, स्वाति, धनिष्ठा, शतभिषा

31) व्यवहार – शांति प्रिय, धार्मिक और अच्छे नैतिकता वाले, अनुशासित, आध्यात्मिक , विद्वान, रक्षात्मक, छिपा हुया स्वाभव, नाटकीय स्वाभव, विरोधाभासी व्यवहार, धार्मिक, सैद्धांतिक, ईमानदार, व्यावहारिक, आदर्शवादी दृष्टिकोण जीवन के प्रति, साहसिक, उग्र होने पर हिंसक।

समान्यतः इस नक्षत्र के प्रतीक दो विपरीत मुख वाले पुरुष है जो दर्शाते है कि जातक नकारात्मक और सकारात्मक दोनो तरह के व्यवहार वाले होते है। इसलिए वे एक साथ दो तरह के स्वाभव वाले होते है एक तरफ वे बहुत विनम्र,शिष्ट,नरम स्वाभव वाले होते है तो दूसरी तरफ वे बहुत हिंसक, खतरनाक और विनाशकारी होते है। और वे आसानी से अपने आसपास और जरुरत के अनुसार अपने स्वाभव का प्रदर्शन करते है।वे दूसरे के लिए

बहुत हानिकारक साबित हो सकते है यदि वे अपने ज्ञान का इस्तेमाल नुकसान पहुँचाने और अन्य गलत कार्यो मे करते है।

32) पेशा – प्रशासनिक सेवा, शिक्षक, व्यापार, वैज्ञानिक अनुसंधान, लेखन, ज्योतिष, खगोल विज्ञान, लेख या ग्रथं विश्लेषण, उग्रवादी, गुप्त गतिविधि, सीक्रेट एजेंट, आपराधिक, माफिया, आतंकवादी स्लीपर सेल, आध्यात्मिक कार्यकर्ता इत्यादि ।

उत्तरभद्रापद नक्षत्र

1) 26th नक्षत्र

2) अंग्रेजी नाम- गामा पेगासी

3)नक्षत्र स्थिति- 3डिग्री 20मिनट से 16डिग्री 40 मिनट मीन राशी तक

4) राशि स्वामी – बृहस्पति

5) विशोंतरी दशा स्वामी – शनि

6) देवता – अहिरबुद्धायन

7)प्रतीक- चारपाई के पिछले पैर

8)वर्ण – क्षत्रिय लेकिन कुण्डली मिलान मे ब्राह्मण

9) वश्य – जलचर

10) गण- मानव

11) नाड़ी- मध्यम

12) योनि – गाय (गौ)

13) योनि वैर – व्याध्र

14) गुण – तामसिक(तमो)

15) दिशा- ऊपर की ओर

16) गतिविधि- संतुलित

17) प्रकृति- स्थिती

18) प्रकृति- ध्रुव (फिक्स्ड)

19) दोष -पित्त

20) लिंग- पुरुष लिंग

21) तत्व – आकाश/गगन तत्व

22) वर्ण – दू , थ, झ, ञ

23) लकी कलर – बैंगनी

24) सबसे विनाशकारी नक्षत्र – उत्तराषाढ़

25) सबसे सहज नक्षत्र – उत्तरफाल्गुणी

26) सबसे असहज नक्षत्र – चित्रा, विशाखा

27) विपत्त नक्षत्र – केतु द्वारा शासित नक्षत्र – अश्विन, माघा, मूला

28) प्रत्यारी नक्षत्र -सूर्य द्वारा शासित नक्षत्र – कृतिका, उत्तरफाल्गुणी, उत्तराषाढ़

29) बाधा नक्षत्र – मंगल ग्रह द्वारा शासित नक्षत्र – मृगशिरा, चित्रा, धनिष्ठा

30) मित्र नक्षत्र- राहु और बृहस्पति द्वारा शासित नक्षत्र – आद्रा, पुनर्वसु, स्वाति, विशाखा, शतभिषा, पूर्वभाद्रपद

31) व्यवहार – आध्यात्मिक, धार्मिक, गहरी अंतर्दृष्टि, समझदार, अच्छे वक्ता, प्रेरक, अनुशासित, दयालु, मानवतावादी, स्मार्ट, ज्ञान प्राप्त करने मे मेहनती, अनुभव के माध्यम से ज्ञान प्राप्त करने की प्रकृति , समस्या को हल करने की अच्छी क्षमता, अड़ियल लेकिन व्यवहार मे उत्तम(कुछ समय के लिए गुस्सैले फिर शांत), यौन गतिविधि मे अधिक सक्रिय ,अत्यधिक भावनात्मक, उग्र स्वाभव वाले, आलसी, गैर जिम्मेदार, दुश्मन का सफाया करने की क्षमता ।

32) पेशा – आयात और निर्यात, शिक्षक, दार्शनिक, पर्यटन उद्योग, चैरिटी संगठन, ज्योतिषी, रहस्यमय काम, धार्मिक कार्य, निर्माण कार्य , वक्ता

रेवती नक्षत्र

1) 27th नक्षत्र

2) अंग्रेजी नाम- जेटा Piscium

3)नक्षत्र स्थिति – 16 डिग्री 40 मिनट मीन राशी से 30 डिग्री मीन राशी तक

4) राशि स्वामी – बृहस्पति

5)विशोंतरी दशा स्वामी – बुध

6) देवता – पूशान (आदित्यों में से एक)

7) प्रतीक – बेलनाकार समय घड़ी

8) वर्ण- शूद्र लेकिन कुण्डली में ब्राह्मण मिलान

9)वश्य – जलचर

10) गण- देव

11) योनि- गज

12) योनि वैर – सिंह

13) नाड़ी – अंत्य

14) गतिविधि- संतुलित

15) प्रकृति- संहारक

16) प्रकृति- मृदु

17) दिशा- लेवल

18) लिंग- स्त्री लिंग

19) दोष – कफ

20) गुण – सात्विक

21) तत्व – आकाश / गगन

22)वर्ण – दे, दो, चा, ची

23) लकी कलर – ब्राउन

24)सबसे विनाशकारी नक्षत्र – श्रवणा

25) सबसे सहज नक्षत्र – भरणी

26) सबसे असहज नक्षत्र – धनिष्ठा, पूर्वभाद्रपद

27) विपत्त नक्षत्र – शुक्र द्वारा शासित नक्षत्र – भरणी, पूर्वफाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा

28) प्रत्यारी नक्षत्र -चंद्रमा द्वारा शासित नक्षत्र – रोहणी, हस्ता, श्रवणा

29) बाधा नक्षत्र – राहु द्वारा शासित नक्षत्र -आद्रा, स्वाति, शतभिषा

30) मित्र नक्षत्र – बृहस्पति और शनि द्वारा शासित नक्षत्र – पुनर्वसु, पुष्य, विशाखा, अनुराधा, पूर्वभाद्रपद, उत्तरभद्रापद

31) व्यवहार – मेलजोल मे कुशल, दूसरो को संवाद कुशलता से नियंत्रित करने की क्षमता, परिस्थिती के दबाब को संतुलित करने की क्षमता, शिक्षा और ज्ञान मे उत्तम, कल्पनाशील, धार्मिक , मृदुभाषी, अच्छा प्रेमी, कार्य कुशल, पूर्ण भावनात्मक, क्रिएटिव विचारक , स्वच्छ मन वाले, अच्छा परामर्श क्षमता, अत्यधिक संवेदनशील, अवसाद, गुस्सैले, ईर्ष्यालु , आत्मविश्वास मे कमी, मिलनसार, सहायक और दूसरो से सहायता/ समर्थन से प्राप्त करते है, कार्यों में ईमानदार, समाजिक, भाग्यशाली, पारखी

32) पेशा – वैज्ञानिक अनुसंधान, पुरातत्व, प्राचीन इतिहास, कविता, लेखन, साहित्य, प्रशासन, ज्योतिष, खगोल विज्ञान, फिल्म अभिनेता, हास्य अभिनेता, धर्मार्थ कार्य, धार्मिक गतिविधियों, रहस्यमय काम, पत्रकारिता, यात्रा, घड़ी / कैलेंडर निर्माता।